



जागत हमारा



चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार, 30 अक्टूबर -05 नवंबर 2023 वर्ष-9, अंक-29

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुँरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ:-8, मूल्य:- 2 रुपए

- » कंपनी को ब्लैकलिस्ट कर उसली का धमकाया नोटिस
- » अडुबध के तहत धान और गेहूँ को रखना था सुरक्षित
- » केपी के निरीक्षण के दौरान तमाम दवाओं की खुली पोल
- » अब गो ग्रीन के धान सुरक्षा से जुड़े प्रबंध पर उठे

- सवाल
- » मेसर्स गो-ग्रीन वेयरहाउसिंग पांच साल के लिए ब्लैकलिस्ट
- » 12 लाख मीट्रिक टन धान, 1850.313 टन गेहूँ किया बर्बाद
- » धान भगवान भरोसे, कर्मचारी की जगह गाई देखते थे फाइल



स्वेदशी-पारंपरिक बीजों की रक्षा करेगी बीबीएसएसएल शाह बोले-जेनेटिक व शुद्धता भी तय करेगी

भोपाल/नई दिल्ली। केंद्रीय सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि नव गठित राष्ट्रीय स्तर की भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (बीबीएसएसएल) भारत के स्वेदशी व पारंपरिक बीजों की रक्षा करेगी और इस दौरान उनकी जेनेटिक व शुद्धता भी सुनिश्चित करेगी। शाह ने किसानों को गुणवत्तापूर्ण प्रामाणिक बीज मुहैया कराने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि बीबीएसएसएल की स्थापना प्रामाणिक बीजों का घरेलू उत्पादन बढ़ाने के साथ निर्यात बढ़ाने के लिए किया गया है। भारत में प्रामाणिक बीजों का उत्पादन केवल 465 लाख टन है। इसमें सहकारी क्षेत्र की हिस्सेदारी केवल एक प्रतिशत के करीब है। प्रामाणिक बीजों की मांग तीन गुना बढ़ने की उम्मीद है। इसमें सहकारी क्षेत्र को 33 फीसदी हिस्सेदारी का लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। शाह ने नवगठित बीबीएसएसएल के सहकारी क्षेत्र के जरिये बेहतर और रपगत बीजों के उत्पादन की राष्ट्रीय गण्ठी का उद्घाटन करते हुए कहा कि भारत उन गिने-चुने देशों में है जहाँ प्राचीन समय से खेती की जा रही है। लिहाजा हमारे पारंपरिक बीज प्रकृति के अनुकूल हैं और स्वास्थ्यवर्धक हैं। अभी ऐसे बीजों की विश्व में मांग बहुत ज्यादा है। हमें पारंपरिक बीजों का संरक्षण करने की जरूरत है और इससे स्वास्थ्यवर्धक भोजन तैयार होता है। इसे नए बीज सहकारी बीबीएसएसएल के जरिये किया जाएगा।



छोटे स्तर पर शुरुआत

बीबीएसएसएल को इन्फ्रको, कृष्णको, केकेड, एनडीडीबी और एनसीडीसी ने संयुक्त रूप से प्रवर्तित किया है। इस अवसर पर शाह ने लोगों, वेबसाइट और पुस्तिका का लोकार्पण भी किया। उन्होंने बीबीएसएसएल के सदस्यों को प्रमाण पत्र भी दिए। बीबीएसएसएल ने छोटे स्तर पर शुरुआत की है लेकिन यह सहकारी संस्था भारत के बीज उत्पादन में अहम योगदान देने वाली है। शाह ने कहा कि यह गणगठित सहकारी संस्था आने वाले वर्षों में बीजों के संरक्षण, संवर्द्धन और शोध कार्य में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

1.32 अरब का धान बर्बाद

55049.25 मीट्रिक टन धान गायब

भोपाल। प्रदेश में जिस कंपनी को धान की देखभाल के लिए करोड़ों रुपयों का भुगतान किया था उसी ने एक अरब 32 करोड़ रुपए का धान बर्बाद कर दिया। दरअसल, जबलपुर और रीवा संभाग में धान की देखभाल के नाम गड़बड़ी सामने आई है, जिसके बाद भोपाल स्तर पर इसकी जिम्मेदारी सभालने वाली कम्पनी को ब्लैक लिस्टेड कर दिया है, लेकिन अब तक कम्पनी के खिलाफ धोखाधड़ी का मामला दर्ज नहीं हुआ है, जिससे पूरी कार्रवाई सबालों के घेरे में आ गई है। लगभग दो सौ करोड़ रुपयों का घोटाला विधानसभा चुनाव के समय हुआ है। अब तक की जांच में गो-ग्रीन कम्पनी के पास धान को सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी थी, लेकिन उसने इस काम में धोखाधड़ी अनियमितता की। उसने कर्मचारियों की बजाए गाई रखे, जो कागज काम और सुरक्षा दोनों देखते थे। ये लोगों को अनाज भंडारण वाली जगह से दूर रखते थे, लेकिन अनाज को भगवान भरोसे छोड़ दिया गया।

दोनों संभाग में कुल 15 जिलों में धान जमा कराई गई, जिसमें कुल 12 लाख 20 हजार मीट्रिक टन धान में से 11.28 एमएलटी धान का भुगतान किया गया और 0.93 शेप रह गई। 2 फीसदी मान्य कमी जोड़ी गई तो यह मात्रा 24407 मीट्रिक टन आई वहीं क्षतिग्रस्त धान 13107.28 मीट्रिक टन रही। सर्वाधिक चोचाने वाला आंकड़ा यह है कि कुल भंडारण में 55049.25 मीट्रिक टन धान कम पाई गई। क्षतिग्रस्त और गायब धान का जोड़ 68156.53 मीट्रिक टन होता है। गो-ग्रीन ब्लैकलिस्टेड मध्य प्रदेश वेयर हाउसिंग एवं लॉजिस्टिक कार्पोरेशन के प्रबंध संचालक ने संभागायुक्त, कलेक्टर और क्षेत्रीय प्रबंधक मप्र वेयर हाउसिंग एवं लॉजिस्टिक कार्पोरेशन को बताया कि जबलपुर और रीवा जिलों में संचालित केम्प की देखभाल करने वाली मेसर्स गो-ग्रीन वेयरहाउसिंग प्राइवेट लिमिटेड को 5 सालों के लिए ब्लैकलिस्ट कर दिया गया है। मेसर्स गो-ग्रीन पर आरोप है कि जबलपुर, सिवनी, नरसिंहपुर, कटनी, बालाघाट, मंडला, डिंडोरी, छिंदवाड़ा, रीवा, सतना, सीधी, सिंगरौली, शहडोल, अनूपपुर और उमरिया की कुल 12 लाख मीट्रिक टन धान और 1850.313 मीट्रिक टन गेहूँ की देखभाल ठीक से नहीं की गई, जिससे बड़ी मात्रा में अनाज खराब हो गया और कई क्रिंटल अनाज गायब भी हो गया।

धान के पौधे निकल आए
भोपाल से जारी किए गए पत्र में उल्लेख किया गया है कि सितंबर-अक्टूबर 2022 में जब गो-ग्रीन द्वारा संचालित केम्प का निरीक्षण किया गया तो अधिकांश केम्प में बेबी स्टैक्स पाए गए और बोरे खुले हुए पाए गए। कई जगह खुली हुई धान भी क्षतिग्रस्त पाई गई। खुले में रखे बोरे में एक से दो फीट धान के पौधे जो हुए पाए गए और 55 हजार मीट्रिक टन धान कम मिले। इसके बाद गो-ग्रीन को कारण बताओ नोटिस जारी किए गए। गो-ग्रीन कम्पनी को ब्लैकलिस्ट किया गया है और अब हमारी तरफ से समस्त केम्पों का हैंडओवर किया जा रहा है। इसके बाद वरिष्ठ अधिकारी आगे की कार्रवाई के लिए निर्देशित करेगे।
-डीके इन्फोवार्ड, आरएम एमपीडीएचएनसी

धान की कुल कीमत 132.22 करोड़

प्रति टन 19400 रुपए के हिसाब से इस धान की कुल कीमत 132.22 करोड़ रुपए होती है। यानी इतनी बड़ी रकम का घोटाला किया गया और अभी तक दौपियों पर एफआईआर तक दर्ज नहीं कराई गई। मध्य प्रदेश वेयर हाउसिंग एवं लॉजिस्टिक कार्पोरेशन के प्रबंध संचालक ने पत्र में बताया है कि गो-ग्रीन ने मनमानी करते हुए धान का उचित तरीके से भंडारण नहीं किया। कम से कम राशि निवेश कर अधिक से अधिक लाभ उठाने की मंशा से यह आपराधिक कृत्य किया है।

मिलकर काम करेगी। वर्तमान में सभाल कमान सभी तरह की एग्जीक्यूटिव वैल्यू चैन के रूप में महाराष्ट्र में 15-20 जिलों के 27,000 किसानों के साथ काम कर रही है।

प्रमाणित बीजों का निर्यात बड़ेगा

शाह ने कहा कि किसानों को वैज्ञानिक रूप से तैयार प्रमाणित बीज उपलब्ध नहीं हो पा रहे हैं। इससे न केवल किसान प्रभावित हो रहे हैं बल्कि देश का खाद्यान्न उत्पादन भी प्रभावित हो रहा है। उन्होंने वैश्विक बीज उत्पादन में भारत की हिस्सेदारी एक प्रतिशत से भी कम होने पर दुःख जताया। उन्होंने कहा कि बीबीएसएसएल भारत से प्रमाणित बीजों का निर्यात बढ़ाएगी। इस सहकारी का पूरा लाभ किसानों में बाँटा जाएगा। बीबीएसएसएल बीजों के उत्पादन, परीक्षण, प्रमाणन, प्रसंस्करण, भंडारण, लेबलिंग, पैकेजिंग और निर्यात पर साथ-साथ काम करेगी।

मध्य प्रदेश समेत 5 राज्यों में एफपीओ के साथ करार की चल रही प्रक्रिया

सलाम किसान का पहला ड्रोन नवंबर में होगा लॉन्च

भोपाल। भारत के तेजी से बढ़ते कृषि स्टार्टअप प्लेटफॉर्म सलाम किसान का पहला ड्रोन नवंबर के आखिरी तक लॉन्च होगा। कंपनी ने कहा है कि वह अगले छह से 12 महीनों में कई राज्यों तक तेजी से विस्तार करने की योजना पर काम कर रही है। सलाम किसान मध्य प्रदेश से लेकर महाराष्ट्र तक करीब 5 प्रदेशों

में एफपीओ के साथ करार करने की प्रक्रिया में है, जिससे वह किसानों की चना की फसल खरीदेगी और उसकी बोवनी से लेकर कटाई तक किसानों के साथ मिलकर काम करेगी। वर्तमान में सलाम किसान सभी तरह की एग्जीक्यूटिव वैल्यू चैन के रूप में महाराष्ट्र में 15-20 जिलों के 27,000 किसानों के साथ काम कर रही है।

इन राज्यों में होगा विस्तार। एक रिपोर्ट के अनुसार सलाम किसान गुजरात, मध्य प्रदेश, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक और महाराष्ट्र में विस्तार कर रहा है। इसके तहत अधिक बागवानी प्रोजेक्ट को एक्सपोर्ट करने, किसानों के लिए फंड्स तक पहुंच प्रदान करने के लिए फाइनेंसियल सर्विसेज शुरू करना शामिल है। जबकि, नवंबर के अंत तक ड्रोन को मैन्यूफैक्चरिंग कार्पोरेशन र करना भी शामिल है। ड्रोन का इस्तेमाल पहले करेगी कंपनी सलाम किसान की संस्थापक का कहना है कि हम कंपनी के एक वर्टिकल के रूप में ड्रोन का निर्माण कर रहे हैं। काम शुरू हो चुका है। नवंबर के अंत तक हमारा पहला ड्रोन लॉन्च होने की उम्मीद है। ड्रोन का निर्माण शुरुआत में अपने

उपयोग के लिए किया जाएगा। अन्य मैन्यूफैक्चरिंग कार्पोरेशन र के ड्रोन का उपयोग करते समय देखी गई जमीनी समस्याओं से संबंधित सभी सुझाव और विशेष सुझाव हमारे ड्रोन में होंगे।
ड्रोन की क्षमता। सलाम किसान के ड्रोन के ड्रोन के समय अधिक होगा। आम तौर पर एक बैटरी केवल सात मिन्ट तक चलती है। इसलिए पर्याप्त ड्रोन की नीचे लाना होगा और उसका पानी बदलना होगा, बैटरी बदलनी होगी और फिर उसे उड़ाना होगा। सलाम किसान के ड्रोन में 30 लीटर का बड़ा टैंक होगा, जबकि सामान्य कंपनियों के ड्रोन में 20 लीटर का टैंक होता है।
उड़ान समय अधिक होगा। पेटेन्ट की क्षमता और उड़ान समय अधिक होगा। कंपनी का दावा है कि हाई स्टेबिलिटी और अधिक क्षमता वाले स्पॉन और मीडियम साइज के ड्रोन पर काम किया जा रहा है। ड्रोन को मैनेज करने के लिए एक मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर का भी विकास होगा, जो वर्तमान में कोई भी मैन्यूफैक्चरिंग कार्पोरेशन पर नहीं देता है। ड्रोन के लिए सर्विस बेकअप और वाउड सपोर्ट सिस्टम दिया जाएगा, जिसमें मैकेनिक और टेक्नोलॉजियन शामिल होंगे।
तीन लाख टन चना खरीदेगी कंपनी। सलाम किसान चालू वर्ष सीजन से आउटपुट मार्केट लिंकेज में पंटी करेगा। एफपीओ के साथ मिलकर 03 लाख टन चना खरीदेगा, जिसके तहत किसानों को बुवाई से लेकर कटाई तक कंपनी

मोपाल। देश में खरीफ की प्रमुख फसल धान की कटाई का काम अपने अंतिम चरण में है। किसान खरीफ की फसलों की कटाई का काम पूरा करके रबी फसलों की बोवनी की तैयारी शुरू कर चुके हैं। ऐसे में किसानों के सामने सबसे बड़ी समस्या होती है सही फसल का चुनाव करना। किसान रबी सीजन में कौन सी फसल की बोवनी करें जिससे फसल का सही उत्पादन प्राप्त हो और किसान बेहतर मुनाफा प्राप्त कर सकें।

नवंबर माह में की जाने वाली प्रमुख फसलों की खेती

चने का सबसे अधिक उत्पादन करने वाला राज्य भी मध्य प्रदेश ही है...

रबी की फसल भारत में अक्टूबर और नवंबर माह के दौरान बोई जाती है जो कम तापमान में बोई जाती है, फसल की कटाई फरवरी और मार्च महीने में की जाती है। आलू, मसूर, गेहूँ, जौ, तोरिया (लाही), मसूर, चना, मटर व सरसों रबी की प्रमुख फसलें हैं। वहीं बात करें रबी सीजन की प्रमुख सब्जी फसलों की तो इसमें टमाटर, बैंगन, भिन्डी, आलू, तोरई, लौकी, करेला, सेम, फूलगोभी, पत्ता-गोभी, गाठ-गोभी, मूली, गाजर, शलजम, मटर, चुकंदर, पालक, मेंथी, प्याज, आलू, शकरकंद आदि सब्जियाँ उगाई जाती हैं।



नवंबर माह में करें इन फसलों की बुवाई

नवंबर महीना में समान्यतः रबी सीजन की फसलों व सब्जियों की बुवाई होती है, हम जागत गांव हमार के इस अंक में रबी सीजन की 5 अधिक मुनाफा देने वाली फसलों व सब्जियों की बात करेंगे। साथ ही यह भी बताएंगे कि अच्छी उपज लेने के लिए किसानों को क्या करना चाहिए। ताकि उन्हें फसल के साथ आर्थिक नुकसान न उठाना पड़े। फसलों को कब और कितनी बार पानी देना चाहिए। रसायन की जगह जैविक खाद का उपयोग करें। नवंबर माह में प्रमुख रूप से बोई जाने वाली फसलें निम्नलिखित हैं-

गेहूँ भारत में रबी सीजन में बोई जाने वाली एक मुख्य फसल है। गेहूँ का उपयोग मनुष्य अपने जीवनयापन के लिए मुख्यतः रोटी के रूप में करते हैं। गेहूँ में प्रोटीन प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। भारत में उत्तर प्रदेश, पंजाब, एवं हरियाणा गेहूँ के मुख्य उत्पादक राज्य हैं। गेहूँ की फसल में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए हमें कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। वो बातें निम्नलिखित हैं-

गेहूँ की बुवाई का उपयुक्त समय मध्य अक्टूबर से नवंबर तक का है। गेहूँ की फसल में बेहतर उपज प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों के बीज का प्रयोग करना चाहिए।

गेहूँ उन्नत किस्में

गेहूँ की करण नरेन्द्र, करण वंदना, पूसा यशसवी, करण श्रिया और डीडीडब्ल्यू 47 आदि उन्नत किस्में हैं।

गेहूँ की बुवाई करते समय कम तापमान और फसल के पकते समय शुष्क और गर्म वातावरण को जरूरत होती है।

गेहूँ की खेती करते समय अच्छे फसल उत्पादन के लिए मटियार दोमट भूमि को सबसे सर्वोत्तम माना जाता है। मिट्टी का पीएच मान 6 से 8 तक का होना चाहिए।

गेहूँ की खेती करते समय बीज की बुआई से पहले बीज की अंकुरण क्षमता की जांच जरूर करनी चाहिए अगर गेहूँ का बीज

उपचारित नहीं है तो बुआई से पहले बीज को किसी फफूंदी नाशक दवा से उपचार अवश्य करना चाहिए।

गेहूँ की फसल में अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए सही मात्रा में उर्वरक का प्रयोग करना चाहिए। गेहूँ की फसल के 20 से 25 दिन के बाद पहली सिंचाई करना चाहिए। गेहूँ की फसल में 3 से 4 सिंचाई की आवश्यकता होती है। फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए समय-समय पर निराई-गुदाई करना आवश्यक होता है। खरपतवार नियंत्रण के लिए किसान भाई रसायन का भी अपनी फसल में छिड़काव कर सकते हैं।

चना

चना रबी सीजन की महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। चना के 100 ग्राम दाने में औसतन 11 ग्राम पानी, 21.1 ग्राम प्रोटीन, 4.5 ग्राम वसा, 61.65 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 149 मि.ग्रा. कैल्शियम, 7.2 मिलीग्राम लोहा, 0.14 मिलीग्राम राइबोफ्लेविन तथा 2.3 मिलीग्राम नियासिन जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। हमारे देश में चना की खेती करने वाले प्रमुख राज्यों में उत्तर प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान तथा बिहार हैं। मध्य प्रदेश में सबसे अधिक क्षेत्रफल में चना की खेती की जाती है व देश में चना का सबसे अधिक उत्पादन करने वाला राज्य भी मध्य प्रदेश ही है। चना की फसल में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए हमें कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। वो बातें निम्नलिखित हैं-



चना की बुवाई करने के लिए मध्य अक्टूबर से नवंबर महीना सबसे उपयुक्त होता है। चना की खेती करने के लिए मध्यम वर्षा (60-90 सेंटीमीटर वार्षिक वर्षा) और सर्दी वाले क्षेत्र सबसे उपयुक्त है।

चना की खेती करने के लिए दोमट व मटियार मिट्टी में सफला पूर्वक किया जा सकता है। मिट्टी का पीएच मान 6 से 7.5 तक का उपयुक्त रहता है। चना की खेती करने के लिए कम और ज्यादा तापमान दोनों ही फसल के लिए हानिकारक है। चना की बुवाई गहरी काली और मध्यम मिट्टी में करें।

चना की खेती करते समय अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों की बीजों की ही बुवाई करें।

चना की पूसा-256, केडब्ल्यूआर-108, डीसीपी 92-3, केडीजी-1168, जेपी-14, जीएनजी-1681, गुजरात चना-4, के-850, आंध्र (आरएसजी-936), डब्ल्यूसीजी-1 और डब्ल्यूसीजी-2 आदि प्रमुख उन्नत किस्में हैं। खरपतवार नियंत्रण के लिए बुआई के 30 से 35 दिन बाद निराई-गुदाई अवश्य करना चाहिए। चना की फसल में अधिक उपज प्राप्त करने के लिए सही मात्रा में खाद का प्रयोग करना चाहिए। चना के खेत में पानी का जमाव ना होने दे, अगर पानी जमा हो रहा हो तो उचित जल सिकस की व्यवस्था करें। कीड़ा व रोगों से फसल के बचाव हेतु समय-समय पर रासायनिक छिड़काव अवश्य करें।

4. आलू



मिठी भुरशी और खेत समतल हो जाए। पाटा लगाने से आलू के कंदों के विकास में आसानी होती है।

आलू की खेती में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उन्नत किस्मों की बीजों का चयन करना चाहिए। आलू की उन्नत किस्मों में राजेन्द्र आलू, कुफरी कंच और कुफरी रिपससेना आदि मुख्य हैं।

आलू की बुआई करते समय कतार से कतार की दूरी 50 से 60 सेंटीमीटर और पौधे से पौधे की दूरी 15 से 20 सेंटीमीटर रखें।

आलू की खेती करते समय 20 से 25 दिन बाद खरपतवार नियंत्रण करने के

लिए निराई-गुदाई अवश्य करें और निराई के दौरान आलू पर मिट्टी चढ़ाकर नारियों को व्यवस्थित करें जिससे आलू के पौधे का विकास सही तरीके से होता है।

आलू की खेती में कम पानी की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई आलू की फसल की बुवाई के 10 से 20 दिनों के अंदर कर देनी चाहिए। इसके बाद 10 से 15 दिनों के अंतराल में थोड़ी-थोड़ी सिंचाई करते रहने चाहिए।

आलू के खेत की सिंचाई करते समय इस बात का खयाल रखें कि मेटे 2 से 3 इंच से ज्यादा नहीं वृद्धे।

3. सरसों



सरसों रबी सीजन की मुख्य तिलहनी फसल है। सरसों की खेती भारत के सभी स्थानों पर की जाती है। मुख्य रूप से सरसों की खेती हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में की जाती है। सरसों की खेती की खास बात यह है की यह सिंचित और अंसिंचित, दोनों ही तरह के खेतों में उगाई जा सकती है। सोयाबीन और पाम के तेल के बाद विश्व में यह तीसरी सब से ज्यादा महत्वपूर्ण तिलहन फसल है। मुख्य तौर पर सरसों के तेल के साथ-साथ सरसों के पत्ते का उपयोग सब्जी बनाने में होता है और सरसों की खली भी बनती है जो कि दुधारू पशुओं को खिलावे के काम आती है। सरसों की फसल में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए हमें कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। वो बातें निम्नलिखित हैं।

सरसों की खेती करने के लिए 25 से 30 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान होना चाहिए, सरसों की खेती करने के लिए दोमट

भूमि सर्वोत्तम होती है। सरसों की खेती करने के लिए मिट्टी का पीएच मान 6 से 7.5 होना चाहिए सरसों की उन्नत किस्मों में पूसा बोल्ड, लिन्ट, पूसा उत्पकिसान (बायो 902), पूसा विजय आदि हैं। सरसों की बुवाई करते समय उन्नत किस्मों के बीजों का ही प्रयोग करना चाहिए सरसों की फसल में पहली सिंचाई 25 से 30 दिनों के बाद करना चाहिए। इसकी खेती में 2 से 3 सिंचाई करना आवश्यक होता है। ध्यान रहे सरसों की

फसल में फलियों में दाना भरने की अवस्था में सिंचाई नहीं करना चाहिए। फलियों में दाना भरने की अवस्था में सिंचाई करने से फसल उत्पादन प्रभावित होता है। सरसों की खेती करते समय अधिक मात्रा में उपज प्राप्त करने के लिए खाद व उर्वरक का सही मात्रा में प्रयोग करना आवश्यक होता है। सरसों की खेती करते समय खरपतवार नियंत्रण के लिए निराई-गुदाई करना आवश्यक होता है।

- आलू का भारत में पैदा होने वाली सब्जियों में सबसे महत्वपूर्ण स्थान है। इसीलिए आलू को सब्जियों का राजा कहा जाता है। आलू में भरपूर मात्रा में पोषक तत्व पाए जाते हैं। आलू की खेती वैसे तो सभी क्षेत्रों में होती है लेकिन भारत में आलू की खेती सबसे अधिक उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और मध्य प्रदेश में होती है। आलू की फसल में अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए हमें कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना पड़ता है। वो बातें निम्नलिखित हैं-
- आलू की बुवाई करने का उपयुक्त समय अक्टूबर से नवंबर का है।
- आलू की खेती करने के लिए समतल और मध्यम उंचाई वाले खेत ज्यादा उपयुक्त होते हैं। साथ ही अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी और बलुई दोमट मिट्टी जिनकी पीएच मान 5.5 से 5.7 के बीच का होना चाहिए।
- आलू की फसल में सबसे पहले कक्टोपेटर की मदद से 2 से 3 बार खेत की जुताई करें। खेत की जुताई करने के बाद पाटा जरूर लगाएं ताकि

समय पर वैज्ञानिक तरीके से खेती करने पर हो सकता है अच्छा मुनाफा

मोपाल। नवंबर के महीने में किसान भाई टंड में होने वाली सब्जियों की खेती कर सकते हैं, जिससे उन्हें अच्छा मुनाफा हो सकता है। नवंबर के माह में लगाई जाने वाली कुछ सब्जियों की खेती के बारे में और सब्जियों की उन्नत किस्मों के बारे में जानिए-

नवंबर में लगाई जाने वाली सब्जी-उनकी उन्नत किस्में



फूलगोभी की खेती और उन्नत किस्म

फूलगोभी एक लोकप्रिय सब्जी है और क्रूसिफेरस परिवार से संबंधित है। इसकी अगोती किस्मों की रोपाई के लिए अच्छा समय जून-जुलाई का होता है। वहीं पिछले किस्मों के लिए अगस्त से मध्य सितंबर और अक्टूबर से नवंबर का पहला सप्ताह रोपाई के लिए अच्छा रहता है।

फूलगोभी की अगोती किस्में

फूल गोभी की अन्य अगोती किस्मों में पूसा दिपाली, अर्ली कुवारी, अर्ली पटना, पन्त गोभी-2, पन्त गोभी-3, पूसा कार्तिक, पूसा अर्ली सेन्थेटिक, पटना अगोती, सेलेक्सन 327 और सेलेक्सन 328 आदि शामिल हैं।

पता गोभी की खेती और उन्नत किस्में

पतागोभी की खेती उचित समय सितंबर से अक्टूबर का होता है, लेकिन नवंबर में भी इसकी खेती की जा सकती है। आमतौर पर पता गोभी फसल की अवधि 60-120 दिन होती है। औसत उत्पादन 200-300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर होती है।

पता गोभी की उन्नत किस्में

गोल्डन एकर, पूसा मुक्का, पूसा इमहेड, के-1, प्राइड ऑफ इंडिया, कोपन हेगन, गंगा, पूसा सिंथेटिक, श्रीगणेश गोल, हरियाणा, कावेरी, बजरंग, मिड सीजन मार्केट, सितंबर अर्ली, अर्ली ड्रम हेड, लेट लार्ज ड्रम हेड, च1 आदि पता गोभी की लोकप्रिय किस्में हैं।

टमाटर की खेती और उन्नत किस्में

टमाटर की खेती करीब-करीब पूरे भारत में की जाती है। देश में उत्तरी मैदानों में शरद एवं बसंत ऋतु में इसकी दो फसलें ली जाती हैं। वहीं दक्षिणी भारत में टमाटर की तीन फसलें ली जाती हैं, जिनकी बुवाई जून-जुलाई, अक्टूबर-नवंबर और जनवरी-फरवरी में होती है। जबकि पंजाब में केवल बसंत से शीघ्र ऋतु मौसम की फसल ली जाती है।

टमाटर की उन्नत किस्में

टमाटर की देशी किस्में: पूसा शीलत, पूसा-120, पूसा रूबी, पूसा गोवर्ध, अर्का विकास, अर्का सौरभ और सोनानी प्रमुख हैं। टमाटर की हाइब्रिड किस्में: पूसा हाइब्रिड-1, पूसा हाइब्रिड-2, पूसा हाइब्रिड-4, रॉस और अकिनाश-2 प्रमुख हैं।



पालक की खेती और उन्नत किस्म

पालक की खेती साल के बरहों महीने की जा सकती है, लेकिन इसकी बुवाई के लिए वैसा अक्टूबर से लेकर अप्रैल तक का समय काफी उपयुक्त रहता है। यह एक ऐसी फसल है, जो कम समय और कम लागत में अच्छा मुनाफा देती है।

पालक की एक बार बुवाई करने के बाद उस की 5-6 बार कटाई की जा सकती है।

पालक की पांच किस्मों की करें खेती-ऑल ग्रीन किस्म:

बुवाई से करीब 35 से 40 दिन में फसल तैयार हो जाती है। इसके बाद लगभग 20 से 30 दिन के अंतराल पर इसके पत्ते कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। इस किस्म की 06 से 07

बार कटाई आसानी से की जा सकती है।

जोबनेर ग्रीन किस्म: बुवाई से करीब 40 दिन में ये किस्म तैयार हो जाती है। इस किस्म से लगभग 10-12 टन प्रति एकड़ तक पैदावार मिलती है।

पूसा हरित किस्म: बुवाई के बाद कई बार इस किस्म की कटाई कर सकते हैं। वहीं इसे तैयार होने में 35 से 40 दिन लगते हैं।

पंजाब ग्रीन किस्म

इस किस्म की 06 से 07 बार कटाई आसानी से की जा सकती है। ये किस्म अधिक पैदावार देने वाली किस्मों से एक है और लगभग 14 से 16 टन प्रति एकड़ पैदावार मिलती है।

मूली की खेती और उन्नत किस्म

मूली की खेती मैदानी और पहाड़ी दोनों इलाकों में की जाती है। मैदानी इलाकों में इसकी बुवाई सितंबर से जनवरी तक की जाती है। जबकि पहाड़ी इलाकों में इसे अगस्त तक बोया जाता है। 5 किस्मों की करें खेती-

पूसा हिमाली: ये किस्म बुवाई के 50 से 60 दिन में पककर तैयार हो जाती है। मूली इस किस्म की औसत पैदावार 320 से 350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक है।

पंजाब परसंड: यह किस्म बुवाई से 45 से 55 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस

किस्म से 250 से लेकर 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

पूसा रेडमी: यह किस्म बुवाई से करीब 55 से लेकर 60 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म से करीब 315 से लेकर 350 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक पैदावार होती है।

रैपिड रेड वाइट टिपड: इस किस्म की मूली बुवाई के करीब 25 से 30 दिन में पककर तैयार हो जाती है।

पंजाब परसंड: ये बुवाई के 45 दिन बाद पककर तैयार हो जाती है।

शिमला मिर्च के उन्नत किस्म

इन्फा: इस किस्म की एक एकड़ भूमि में खेती करने पर 110 क्विंटल तक की पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

बॉम्बे (रेड): यह शिमला मिर्च की जल्दी पकने वाली किस्मों में से एक है। बॉम्बे रेड किस्म के पौधे लम्बे, मजबूत एवं फैलने वाले होते हैं। मिर्च का सही तरीके से विकास के लिए इसकी खेती के लिए छंद वाले स्थान का चयन करना उपयुक्त होता है।

भारत: इस किस्म के पौधे ऊपर फि तरफ बढ़ने वाले, घने, मजबूत व गहरी पत्ती लिए होते हैं। फल मोटे 3 से 4 प्रकोष्ठ वाले और चिकनी सतह के होते हैं। प्रत्येक फल का औसत वजन 150 ग्राम होता है। इसके बीज इंडो अमेरिकन हाइब्रिड सीड कंपनी के अधिकृत बीज भंडारों से प्राप्त किए जा सकते हैं।

पूसा वीमी शिमला मिर्च: पूसा वीमी शिमला मिर्च हाइब्रिड किस्म की शिमला मिर्च है। इस मिर्च का पौधा दिखने में मध्यम आकार का झाड़ीनुमा होता है। इस किस्म के शिमला मिर्च के मिर्च का रंग हल्का हरा होता है जो पकने के बाद गहरे लाल रंग में परिवर्तित हो जाता है। पौधे की रोपाई के 70 से 75 दिनों के बाद मिर्च पकने लगती है और हार्वैस्टिंग के लिए भी तैयार हो जाती है।

सौलन भरपूर: इस किस्म के फल घटी गुमा होते हैं। यह फसल 70 से 75 दिन में तैयार हो जाती है। फल सडन और जीवाणु रोग सहनशील है। इसकी पैदावार 300 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है।

लहसुन की उन्नतशील किस्में

एग्जीक्यूटिव सफेद (जी-41): इस किस्म के कंठ ठोस, मध्यम आकार के संकेत तथा गुलाबी रंग का होता है। **यमुना सफेद (जी-1), यमुना सफेद-2 (जी-50), यमुना सफेद-3 (जी-282), यमुना सफेद-4 (जी-323), यमुना सफेद-5 (जी-189), भीमा आँकर, भीमा परल**

प्याज

प्याज की बुवाई आमतौर पर नवंबर के अंतिम सप्ताह में की जाती है। बुवाई नवरी में की जाती है। एक हेक्टेयर खेत के लिए पौध तैयार करने के लिए 1000 से 1200 वर्ग मीटर में बुवाई की जानी चाहिए। एक हेक्टेयर खेत के लिए 8 से 10 किलो बीज की जरूरत होती है। अनुमानतः एक वर्ग मीटर में 10 ग्राम बीज डालना चाहिए। बुवाई के बीजों को कतार में डालना चाहिए। इसमें कतार के कतार की दूरी 4 से 5 फीट और बीज से बीज की दूरी दो तौन सेमी गैरार्ड दो से चार सेमी होनी चाहिए।

प्याज की उन्नतशील किस्में: भीमा शैला, भीमा सुपर, भीमा लाल, भीमा गहरा लाल, भीमा गुप्ता, पूसा रेड, पूसा रत्नार, हिंसा-2, पूसा व्हाइट फ्लैट, अर्ली गोजी।

मटर की खेती और उन्नत किस्म

दहलनी फसलों में मटर का प्रमुख स्थान है। मटर की बुवाई का भी यह उचित समय है। इसकी खेती के लिए अक्टूबर व नवंबर का महीना काफी उपयुक्त होता है। मटर की किस्में मटर की किस्मों को दो भागों में विभाजित किया गया है। इसमें एक फीट मटर और दूसरी सब्जी मटर या गार्डन मटर है।

मटर की पांच उन्नत किस्में- आर्कल किस्म: आर्कल एक मटर की यूरोपियन किस्म है। इसके काने मीठे होते हैं। यह मटर की जल्दी तैयार होने वाली किस्मों में से एक है। इसकी फसलों को बुवाई के करीब 60 से 65 दिन बाद तोड़ना शुरू कर सकते हैं। इसकी फसलां आठ से 10 सेमी लंबी तलवार के आकार की होती हैं और इसमें पांच से छह दाने होते हैं।

काशी नविकी किस्म: काशी नविकी मटर की एक अगोती किस्म है। अगोती किस्मों में इस किस्म का मुख्य स्थान है। बुवाई के लगभग 60-65 दिनों में इसकी फसलां तुड़ाई योग्य हो जाती है। इसकी एक फसल में 7-9 दाने बने होते हैं। इसकी सबसे बड़ी बात यह है कि पौधे में लगे सभी फसलां एक साथ तैयार हो जाती हैं जिससे बार-बार तुड़ाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है। इससे प्रति हेक्टेयर 110-120 क्विंटल मटर का उत्पादन किया जा सकता है।

पूसा श्री किस्म: पूसा श्री किस्म वर्ष 2013 में विकसित की गई एक अगोती किस्म है। यह किस्म उत्तर भारत के



मैदानी क्षेत्रों में बुवाई के लिए उपयुक्त है। ये किस्म बुवाई के 50 से 55 दिनों बाद फसल तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती है। इसकी प्रत्येक फसल में 6 से 7 दाने निकलते हैं। वहीं इससे प्रति एकड़ 20 से 21 क्विंटल हरी फसलां प्राप्त होती हैं।

पंत मटर 155 किस्म: ये किस्म हाइब्रिड मटर की एक अगोती प्रजाति है। इसे पंत मटर 13 और डी डी अर-27 के संकरण से विकसित किया गया है। इसकी बुवाई से 30 से 35 दिनों के अंदर ही इसमें फूल आने लगते हैं, जबकि इसकी हरी फसलां के रूप में पहली तुड़ाई 50 से 55 दिनों में कर सकते हैं। इस किस्म की रोग प्रतिरोधक क्षमता अच्छी है, जिसके कारण इसमें चूर्ण फफूंद और फली छेदक रोग का प्रकोप कम देखने को मिलता है। ये किस्म प्रति हेक्टेयर 150 क्विंटल तक पैदावार देने में सक्षम है।

अर्ली बैजर किस्म: मटर की ये एक विदेशी किस्म है, जिसके पौधों की फसलां में बन्ने वाले बीज घुरीदार पाए जाते हैं। इस किस्म का पौधा बल विस्थाई देता है। जिसके पौधे बीज रोपाई के लगभग 50 से 60 दिन बाद पहली तुड़ाई के लिए तैयार हो जाती है। इस किस्म के पौधों की प्रत्येक फसलां में औसतन 5 से 6 दाने पाए जाते हैं। इस किस्म पौधों से हरी हेक्टेयर औसतन उत्पादन 10 टन के आसपास पाया जाता है।

धनिया की खेती और उन्नत किस्म

धनिया की फसल रबी मौसम में बोई जाती है। धनिया बोने का सबसे उपयुक्त समय 15 अक्टूबर से 15 नवंबर है। धनिया की सामयिक बोनी लाभदायक है। दानों के लिये धनिया की बुआई का उपयुक्त समय नवंबर का प्रथम पखवाड़ा है।

उन्नत किस्में- धनिया की मुख्य किस्मों में में हिसार सुगंध, पंत हरितमा, कुंभराज, आरसीआर 41, आरसीआर 435, आरसीआर 436, आरसीआर 446, आरसीआर 480, आरसीआर 684, आरसीआर 728, किम्पोएस 33, जेडी-1, एसीआर 1, सीएस 6, जीसी 2 (गुजरात धनिया 2) आदि शामिल हैं।

लहसुन की खेती और उन्नत किस्म- अधिक गर्म व अधिक ठंडे मौसम को छोड़कर लहसुन खेती सभी प्रकार की जलवायु में की जा सकती है। इसे 1000-1300 समुद्रतल तल की ऊंचाई पर सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।



गर्म होती पृथ्वी को बचाने के लिए प्रभावी उठाने होंगे जरूरी कदम

तपती धरती को और गर्म होने से बचाया जाना चाहिए, इस पर सबकी राय लगभग एक है। पर दुनिया के राजनेता चाहते हैं कि इसकी कीमत उन्हें न चुकानी पड़े, कोई दूसरा चुकाए। हालांकि यह महत्वपूर्ण है कि संयुक्त राष्ट्र महासचिव और पोप अपनी ओर से राजनेताओं पर लगातार दबाव बनाए हुए हैं। 2015 में पेरिस समझौता पृथ्वी के तापमान को शताब्दी के अंत तक पूर्व औद्योगिक काल के औसत से दो डिग्री सेंटीग्रेड ऊपर तक न जाने देने के लिए हुआ था। इसमें उम्मीद की गई थी कि अगर हो सके तो इसे 1.5 सेंटीग्रेड तक ही सीमित रखने का प्रयास होना चाहिए। पर चिंताजनक है कि 2023 में ऐसे दिनों की संख्या बढ़ी हुई दर्ज हुई, जब 1.5 डिग्री सेंटीग्रेड की यह सीमा टूटी है।

संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुतेर्रेस इस समय को जलवायु आपदाकाल कहते हैं। दिल्ली में जी20 सम्मेलन में भी पहुंच कर वे जलवायु और पर्यावरण सत्र में चेता गए थे कि इस जलवायु आपदा काल पर तुरंत काम किया जाना चाहिए। जो कुछ जैसा चल रहा है, उसको हम वैसा जारी नहीं रख सकते हैं। वे लगातार कह रहे हैं कि अब और तेल निकालना बंद किया जाना चाहिए।

नए तेल उत्पादन के लिए न तो लाइसेंस और न ही पैसा दिया जाना चाहिए। पिछले वर्ष जारी संयुक्त राष्ट्र की 'यूनाइटेड इमोशन गैप' रिपोर्ट के अनुसार पेरिस जलवायु समझौता प्रभावी रहे, इसके लिए 23 अरब टन कार्बन डाईऑक्साइड की कटौती जरूरी है। जबकि अभी विभिन्न देशों के एनडीसी यानी राष्ट्रीय स्तर पर तय सारी उत्सर्जन कटौतियों की शपथों को अगर जोड़ भी दिया जाए, तो कुल उत्सर्जन कटौती दो से तीन अरब टन की ही आती है। देशों ने अपने-अपने उत्सर्जन कटौती लक्ष्य आखिरी बार 2020 में घोषित किए थे। अब उन्हें यह 2025 में करना है।

विश्व के अन्य क्षेत्रों की ही तरह धनी देशों में भी जलवायु बदलाव के कारण अप्रत्याशित बेमौसमी बाढ़, लू के थपड़े, चक्रवाती तूफान आपदाओं में तब्दील हो रहे हैं, लेकिन धनी देश आज भी जीवाश्म ईंधनों के उपयोग को बंद करने का समर्थन नहीं करते हैं। कम करने की बात भी आधी-अधूरी ही होती है। एक अनुमान के मुताबिक, उत्तर के पांच मुख्य धनी देश अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, आस्ट्रेलिया और नार्वे वे देश हैं, जहां 2050 तक आधे से ज्यादा तेल और गैस के नए कुएँ खोदे जाएंगे। भारत और चीन में भी तेल और कोयला दोहन बढ़ोतरी पर है। विश्व बैंक ने भी हाल में ही इंडोनेशिया की एक बड़ी कोयला परियोजना के लिए धन मंजूर किया है।

पृथ्वी का तापमान में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। इसलिए जैव विविध रोकने को लेकर वैश्विक जन उबाल और दबाव भी बढ़ रहा है। आज पूरे विश्व में लाखों जलवायु कार्यकर्ता सक्रिय हैं।

1980 से ही पर्यावरण पर काम करने वाली कई संस्थाएं यह कर रही थीं। बीते महीने 17 से 24 सितंबर के बीच न्यूयार्क में संयुक्त राष्ट्र की अद्वैतहर्षक महासभा के पहले विश्व के राजनेताओं पर दबाव बनाने के लिए 10 सितंबर से ही यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका, दक्षिण पूर्वी एशिया में जीवाश्म ईंधन के उपयोग पर पूर्ण पाबंदी की मांग को लेकर जगह-जगह हजारों लोगों, विशेषकर युवाओं ने प्रदर्शन किए और रैलियां निकाल कर अपने-अपने देशों में नए-नए तेल और गैस के कुएँ खोदने का विरोध किया। प्रदर्शन इंडोनेशिया और फिलीपींस में भी हुए थे। आस्ट्रेलिया के नगर विपना में हजारों जलवायु कार्यकर्ताओं ने



राष्ट्रीय जलवायु संरक्षण कानून की भी मांग की। जर्मनी के बर्लिन में समाचारों के अनुसार प्रदर्शनकारियों के हाथों में ऐसी तख्ती थी थी, जिस पर लिखा था-अभी इस जुलूस में चल लो, नहीं तो बाद में तैनात होगा। यह जलवायु परिवर्तन में आवासीय क्षेत्रों में बाढ़ और जल प्लावन की स्थितियों पर व्यंग्य था। सबसे ज्यादा चर्चित प्रतिरोध न्यूयार्क के रहे। गुतेर्रेस द्वारा 20 सितंबर 2023 को संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय न्यूयार्क में आहुत विशेष नई 'क्लाइमेट एंबीशन समिट' पर दबाव बनाने के लिए वहां 10 सितंबर से ही 'जैव ईंधन समाप्त करने के लिए जुलूस' आरंभ हो गए थे। मिडटाउन और मैनहटन में रैलियां हुईं। जो बाइडेन भी नए जीवाश्म ईंधन उत्पादों को अनुमति देने के लिए निशाने पर रहे। 17 सितंबर को न्यूयार्क में भी 'जैव

ईंधन समाप्त करने के लिए जुलूस' आयोजित हुआ। इसे चार सौ वैज्ञानिकों और पांच सौ से ज्यादा संगठनों ने समर्थन दिया था। न्यूयार्क में वैसे भी कोयला, तेल और गैस पर रोक लगाने की मांग बढ़ रही है। पर फिलहाल ऐसा लगता है कि राजनेताओं पर इन दबावों का असर नहीं पड़ा। उल्टे प्रदर्शनकारियों की गिरफ्तारियां भी हुई थीं।

25 नवंबर, 2022 को भी स्वीडन में युवाओं ने अपनी संस्था 'अरोरा' के माध्यम से प्रदर्शन करते हुए स्वीडन सरकार पर जलवायु विषयों पर कुछ नहीं करने का आरोप लगाते हुए एक मुकदमा किया था। ऐसा उस देश की न्यायिक प्रणाली में पहली बार हुआ था। न्यूयार्क में जलवायु कार्यकर्ता ही नहीं, संयुक्त राष्ट्र महासचिव भी अपनी नैतिक शक्ति का उपयोग कर राजनेताओं पर लगातार दबाव बना रहे थे।

उन्होंने 20 सितंबर को न्यूयार्क में एक विशेष बैठक भी बुलाई थी, मगर वे पहले ही यह कह चुके थे कि इसमें केवल उन्हीं नेताओं को बोलने दिया जाएगा जो गर्म होती पृथ्वी को बचाने के लिए प्रभावी नई कार्यवाही कर रहे हैं और अपने-अपने देशों में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। बड़े देशों को इस जलवायु विमर्श में बोलने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया था। यह एक तरह से बिना नाम लिए जलवायु परिवर्तन की दिशा में कुछ न करने के लिए नेताओं को आईना दिखाया भी था।

धनी देश तकनीकी और आर्थिक स्थितियों के कारण जैव ऊर्जा को त्यागने की बेहतर स्थिति में हैं। मगर वे ऐसा करने को तैयार नहीं हैं। पृथ्वी के प्रति धनी देशों की संवेदनहीनता को देखते हुए गुतेर्रेस ने सितंबर में महासभा के पहले इन देशों को पृथ्वी को तोड़ने वाला यानी 'ब्रेकर' तक कह दिया था। पोप फ्रांसिस भी पिछले सात-आठ वर्षों से पृथ्वी के हित में नैतिक ताकत बने हुए हैं। वे 2015 के ऐतिहासिक पेरिस समझौते के पहले ही तेल कंपनियों और कार्यकर्ताओं को जलवायु आपदाकाल के प्रति चेता चुके थे।

सूकरों में पिगलेट एनीमिया का उचित प्रबंधन

- डॉ. सुलोचना सेन
- डॉ. राजेश वाई
- डॉ. अभिलाषा सिंह
- डॉ. सुमन सेन
- डॉ. बालेश्वरी दीक्षित
- डॉ. अनीता तिवारी

-पशु आनुवंशिकी एवं प्रजनन विभाग
पशु पोषण विभाग, पशु चिकित्सा एवं
पशुपालन विस्तार शिक्षा विभाग, पशुजन
स्वास्थ्य विभाग

पिगलेट, एनीमिया आयरन की कमी से होता है। इसके कारण पिगलेट में मितव्ययिता होती है। एनीमिक पिगलेट पीले दिखते हैं और गले, छाती और शरीर के आंतरिक स्थानों के आसपास तरल पदार्थ जमा होता है। दस्त (दस्त) सामान्य है और अन्य स्थितियों और रोगों के लिए रोध प्रतिरोध कमजोर होता है। अनुपचारित लिटर में लगभग 10: प्रीवीनिंग मौतों के लिए पिगलेट एनीमिया जिम्मेदार है। पिगलेट एनीमिया लोहे के निम्न स्तर के कारण होता है, दूध छुड़ाने तक, नवजात शिशुओं में हीमोग्लोबिन के संतोषजनक रक्त स्तर को बनाए रखने के लिए पर्याप्त आयरन की कमी होती है, क्योंकि माँ का दूध थोड़ा ही मात्रा में आयरन प्रदान करता है। प्राकृतिक परिस्थितियों में पाले गए सूकरों को मिट्टी से पर्याप्त लोहा मिल सकता है।

नाभि से खून बहने से भी खून की कमी के कारण एनीमिया हो सकता है। नाभि से खून बहना विटामिन-के की कमी से जुड़ा हो सकता है। तेजी से बढ़ने वाले पिगलेट को धीमे उत्पादकों की तुलना में रक्त हीमोग्लोबिन के समान स्तर को बनाए रखने के लिए अधिक आयरन की आवश्यकता होती है। तेजी से बढ़ने वाले पिगलेट को सामान्य पूरक खुराक पर्याप्त आयरन प्रदान करनी चाहिए।

नैदानिक संकेत: पीलापन (निदान के लिए उपयोग न करें क्योंकि यह भ्रामक हो सकता है)। गले, ब्रिस्कट और शरीर के आंतरिक स्थानों के चारों ओर तरल पदार्थ जमा करें। दस्त (डायरिया) होने की संभावना। अन्य स्थितियों और बीमारियों के लिए अतिसंवेदनशील।

जोखिम अग्रिम: वेअनिंग से पहले (वेअनिंग के पश्चात सूकरों को अपने आहार से पर्याप्त लोहा मिलाना चाहिए)। **निगरानी और कार्रवाई:** रक्त नमूनों की जांच करें। पोस्टमार्टम में स्मीयरों की जांच करें। पीलापन भ्रामक हो सकता है। इसके द्वारा निदान मत करो। आयरन के साथ सप्लीमेंट करें।

निष्कर्ष: इंजेक्शन (सबसे आम), मुंह से या अन्य तरीकों से खुराक द्वारा अतिरिक्त लोहे के साथ पूरक करें। **इंजेक्शन:** लोहे के डेक्सटान, आयरन गैलेक्टन या अन्य लोहे के यौगिकों के साथ इंजेक्ट करें। पिगलेट्स को जन्म के 72 घंटे पूरा होने से पहले इंजेक्शन दें। मांसपेशियों में या त्वचा के नीचे इंजेक्ट करें। हमेशा निर्माता के निर्देशों का पालन करें। इंजेक्शन साइट का उपयोग करने और साफ करने से पहले सूखें और सीरिज को स्टेरलाइज करें। हाइपोडर्मिक सुई के उपयुक्त गेज का उपयोग करके इंजेक्शन साइट से अत्यधिक रिसाव से बचें। इंजेक्शन वाली जगह पर बार-बार चोट लग जाती है। पैर में इंजेक्शन लगाने से लंगड़ापन हो सकता है, जिससे अनाजों में माँ द्वारा दबाये जाने की संभावना बढ़ जाती है। लोहे के इंजेक्शन स्थल पर मांसपेशियों में धुंधलापन पैदा कर सकते हैं जो ठीक से ठीक नहीं होते हैं और जिनका पता लगाना मुश्किल होता है। अक्सर वे केवल उपभोक्ताओं द्वारा ही पहचाने जाते हैं, एक अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद की छवि को कम करते हैं। कभी-कभी संक्रमण या फोड़े, इंजेक्शन स्थल पर विकसित हो सकते हैं। लंगड़ापन, धुंधलापन और संक्रमण को कम करने के लिए पैर के बजाय कान के पीछे गर्दन में इंजेक्शन लगाएं। **गर्दन में इंजेक्शन कैसे लगाएं:** इंजेक्शन स्थल पर त्वचा और मांसपेशियों को फैलाने के लिए सूकर के फिर को एक तरफ मोड़ें। यह खुराक के रिसाव को रोकने में मदद

करता है। इंजेक्शन लगाने के बाद, अपना अंगूठा साइट पर रखें और सूकर की गर्दन को सीधा होने दें। पिगलेट को बायीं ओर और शरीर के बीच में पकड़ें।

सूकर के दाहिने कान को आगे की ओर खींचने के लिए बाएं हाथ का उपयोग करें, गर्दन को त्वचा को उजागर और खींचें। त्वचा को आगे की ओर धकेलने के लिए सुई का उपयोग करें, और फिर पेशी में धकेलें। इंजेक्शन लगाने से पहले त्वचा को आगे बढ़ाने से खुराक के रिसाव को रोकने में मदद मिलती है। सुई को वापस ले लें और उसी समय कान को छोड़ दें। उपयोग करने के लिए 20 से 30 सुई 18 गेज और 18 गेज हैं।

मौखिक खुराक: मौखिक खुराक इंजेक्शन के कारण होने वाले धुंधलापन, लंगड़ापन और संक्रमण से बच सकती है लेकिन अधिक महंगी होती है। वे अविश्वसनीय भी हैं क्योंकि आंत के माध्यम से अवशोषण कम कुशल है। **आयरन गैलेक्टन से**

तैयार ऑर्गेनिक आयरन की खुराक कैसे लें: पिगलेट के 18 घंटे के होने से पहले दें (बहुत पहले ही लोह गैलेक्शन जीवन में आंत से अवशोषित होता है)। पूरी अनुशंसित खुराक दें। दूसरी खुराक दें यदि पहली बार उल्टी हो गई हो। यदि 18 घंटे से अधिक पुराना हो तो वैकल्पिक तैयारी का उपयोग करें।

कभी-कभी एनीमिया विकसित हो सकता है, भले ही पिगलेट को आयरन गैलेक्शन के साथ लगाया गया हो। सामान्य कारण गलत समय, गलत खुराक तकनीक या जल्दी हैं। कुछ रिपोर्टों में कहा गया है कि लोहे के साथ मौखिक खुराक पेट में बैक्टीरिया के विकास को बढ़ाकर दस्त का कारण बन सकती है।

सस्ता अकार्बनिक लोहा (जैसे फेरस सल्फेट) मौखिक रूप से दिया जा सकता है, लेकिन दैनिक अवशोषित की जा सकने वाली मात्रा सीमित है, इसलिए बार-बार खुराक की आवश्यकता होती है।

अन्य तरीके: ये तरीके उपयोगी बैकअप हो सकते हैं लेकिन व्यक्तिगत खुराक बेहतर है क्योंकि आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि सभी पिगलेट को आयरन की खुराक मिलती है। फेर्रोइंग पेन में लोहे के यौगिकों और धाया दूधित मिट्टी का छिड़काव करें। उच्च लोह सामग्री के साथ क्रॉप फीड प्रदान करें। फेर्रोइंग पेन में स्टील की फिटिंग्स को चाटने वाले पिगलेट और लोहे के यौगिकों के साथ लेपित थन से लोहे के स्तर को बढ़ाएं।

जगह बदलते ही बदल जाता है मिट्टी का रंग और गुण, क्या वाकई रंग से मिल पाती है सटिक जानकारी?

साइंस के मुताबिक मिट्टी को निर्माण में हजारों-लाखों वर्षों का समय लगता है। मिट्टी का स्वरूप भी पूरी पृथ्वी पर एक सा नहीं होता है। हर जगह की मिट्टी के रंग और गुणों में बड़ा अंतर होता है। साइंटिस्ट्स और कृषि विशेषज्ञ आदि मिट्टी का वर्गीकरण उसके रंगों के आधार पर करते हैं, लेकिन अहम सवाल यह है कि आखिर मिट्टी का रंग कैसे बदलता है, क्या रंग के कारण मिट्टी के गुण प्रभावित होते हैं? **कई कारकों का असर:** मिट्टी का रंग बदलने की मुख्य वजह उसकी रासायनिक संरचना होती है। जगह के कारण भी मिट्टी के रंग में फर्क देखने को मिलता है। इस पर कारकों का प्रभाव होता है। इनमें तापमान, बारिश जैसे जलवायु कारकों के अलावा मिट्टी के मौजूद जैविक तत्व भी मिट्टी के रंग को प्रभावित करते हैं। **लाल रंग का कारक:** लाल मिट्टी कई क्षेत्रों में पाई जाती है, जिसमें कई बार कलहई रंग होने का भी आभास होता है। मिट्टी में लाल के होने का कारण उसमें आयरन ऑक्साइड की उपस्थिति का संकेत है, जिसे जंग भी कहते हैं। मिट्टी जितने ज्यादा गहरे लाल रंग की होती है, उतनी ही ज्यादा पुरानी होती है। इसके अलावा कई जगह कोकोनीनो बलुआ पत्थर मौजूद होने के कारण भी मिट्टी का रंग लाल होता, जो पेरिजोना के सेडोना के पास की चट्टानों में मिलता है। कई बार धूल में मिला लोहा आवसीत होने के कारण मिट्टी में लाल रंग की लालिमा आ जाती है। ऐसी मिट्टी में समष्ट के साथ आयरन ऑक्साइड की मात्रा बढ़ती है और वह लाल होती रहती है। **पीले रंग का कारक:** कई इलाकों में पीले रंग की मिट्टी बहुत ज्यादा पाई जाती है। जब भी मिट्टी में आयरन ऑक्साइड की मात्रा थोड़ी कम मात्रा में होती है तब मिट्टी का रंग लाल होने की वजह से पीला हो जाता है। इसका मिट्टी की अन्य विशेषताओं पर भी बहुत असर होता है। **गहरे या काले रंग की मिट्टी:** गहरे या काले रंग की मिट्टी में जैविक पदार्थ होने की मात्रा ज्यादा होने की संभावना होती है। दरअसल, जिन शीतोष्ण जलवायु में पर्याप्त बारिश होती है, वहां कि मिट्टी में ह्यूमस या खाद (मृत पौधों का विखंडित पदार्थ) होने के कारण वह गहरे रंग की होती है। ऐसी मिट्टी खेती के लिए बहुत उपयोगी और उपजाऊ होती है। **हल्के रंग की मिट्टी:** हल्के रंग की मिट्टी वर्षावनों या रेगिस्तान में पाई जाती है। इसमें कम ह्यूमस या खाद होती है, जिससे पता चलता है कि मिट्टी में पोषण की कमी है। लाल और पीले रंग की मिट्टी में भी ह्यूमस नहीं होने के कारण वे खेती के लिहाज से बहुत अच्छी नहीं मानी जाती हैं। **सफेद मिट्टी** इसमें चूना या फिर नमक बहुत ज्यादा मात्रा में होता है, कई जगह पर सफेद रंग कार्टाइट जैसे पदार्थों के कारण भी आ जाता है। ऐसी मिट्टी रेगिस्तान में दिखती है। जब पानी के साथ आ जाता है तो वह सूख कर नमक छोड़ जाता है, जिससे मिट्टी सफेद दिखती है। ऐसी मिट्टी खेती के लिए बहुत खराब होती है।

रबी फसलों की खेती में काम आने वाले जरूरी कृषि यंत्र

रोटावेटर से किसान करें खेत की जोताई, बढ़ जाएगी उर्वरा शक्ति और नमी भी बनी रहेगी



भोपाल। जागत गांव हमार

रबी सीजन की शुरुआत हो गई है और खरीफ सीजन समाप्ति की ओर है। यानी एक तरफ फसल जहां कट रही है। वहीं दूसरी तरफ आगे रबी की कई फसलों के लिए खेत तैयारी, जुताई और बुवाई का काम चल रहा है। इसे किसानों के लिए सबसे संवेदनशील समय कह सकते हैं, इसलिए अभी इतने सारे कार्यों का निपटारा तेजी से और बेहतर करना एक बड़ी चुनौती है, जिसे कृषि यंत्रों के सहारे बेहद आसान बना सकते हैं। कुछ यंत्र जिनकी कीमत आपकी पहुंच में हो और उपयोगिता लगातार हो, उन्हें आप खरीद सकते हैं। या फिर कई यंत्रों को भाड़े पर लेकर अपना काम आसान कर सकते हैं। आज के रबीनामा में जांतेगे खेत तैयारी और रबी फसलों की बुवाई करने वाले आधुनिक कृषि यंत्रों के बारे में।

रोटावेटर खेत तैयारी का काम करे आसान- रोटोवेटर 35 हॉर्सपावर या इससे ऊपर के हॉर्सपावर के ट्रैक्टर में संचालित होने वाला उपकरण है। ये मशीन खेत जुताई और खेत को समतल करने में सक्षम है। प्लेन रोटोवेटर खरीफ की पिछली फसल अवशेषों को पूरी तरह से नष्ट करने के साथ-साथ पडलिंग और हीर खाद की फसलों को खेत में मिलाने का काम भी अच्छी तरह से करता है। यह मिट्टी में 0.6 इंच गहराई तक पहुंच कर फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाता है। इसके जरिए दबाए गए फसल अवशेष मिट्टी में मिलकर धीरे-धीरे खाद में बदल जाते हैं। इससे खेत की उर्वरा शक्ति भी बढ़ती है और नमी के संग्रहण में भी मदद मिलती है। इस यंत्र की कीमत 80 हजार रुपए से शुरू होकर 1.50 लाख तक होती है।

रोटावेटर सीड ड्रिल से जुताई-बुवाई एक साथ

इसी रोटोवेटर का एक और रूप जिसे रोटोवेटर रोतो टिल ड्रिल कहते हैं, इससे धान, मक्का और गन्ने की कटाई वाले खेतों की जुताई कर बीज बोने का काम आसानी किया जा सकता है। इससे समय और ऊर्जा की बचत होती है। इस यंत्र में रोटोवेटर और बुवाई मशीन की गहराई अलग-अलग सेट करने का प्रावधान है। इसलिए इसमें दोनों यंत्रों की गहराई को लेकर कोई परेशानी नहीं आती है। इस यंत्र से 30 से 35 प्रतिशत तक समय की बचत और 20 से 25 प्रतिशत तक लागत में कमी भी संभव है। इसकी अनुमानित कीमत लगभग 01 लाख से लेकर 2.5 लाख रुपए तक की होती है।



पोटेटो प्लांटर कम खर्च में आलू की बुवाई करे बेहतर

इस समय आलू की बुआई का काम चल रहा है और इसमें एक खास मशीन आपकी जवदस्त मदद कर सकती है। किसानों के लिए आलू की बुवाई बेहद खर्चीला काम है। लेकिन अब ट्रैक्टर खेत में ले जा कर पोटेटो प्लांटर की

सहायता से आलू की बुआई का काम कम खर्च में और कम समय में बेहतर तरीके किया जा सकता है। इसके सेमी ऑटोमेटिक यंत्र से आलू की बुवाई करने के लिए इसके हापर में आलू भर दिए जाने हैं। यह हापर पीछे की तरफ से

खुला होता है। यंत्र की हर साइट पर एक-एक व्यक्ति बैठा दिया जाता है जो हापर में से आलू उठा कर डिस्क के होल में डालने का काम करते हैं। इस मशीन से एक घंटे में लगभग एक एकड़ में आलू की बुवाई संभव है।

ऑटोमेटिक पोटेटो प्लांटर काम करे छूतंटर

ऑटोमेटिक पोटेटो प्लांटर ऑटोमेटिक वर्कन है। इसमें बिना किसी एक्स्ट्रा व्यक्ति को लगाए ऑटोमेटिक तरीके से आलू की बुवाई की जा सकती है। यह यंत्र सेमी ऑटोमेटिक की तुलना में महंगा तो होता ही है, इस मशीन को ट्रैक्टर के साथ भी चलाया जाता है। इसकी दक्षता समान्य पोटेटो प्लांटर से अधिक है। यह मशीन बहुत जल्दी आलू की बुवाई करने में सक्षम है। इसके प्रयोग से कम समय में अधिक क्षेत्रफल में आलू की बुवाई की जा सकती है। साथ ही इसमें बुवाई के साथ उर्वरक का भी खेत में प्रयोग होता है। इस ऑटोमेटिक पोटेटो प्लांटर की कीमत 01 लाख से लेकर 5.50 लाख तक है। इस तरह के पोटेटो प्लांटर, सोनालिका महिंद्रा, शक्ति मान जैसी बड़ी कंपनियां बनाकर बेचती हैं।

कृषि यंत्रों पर मिलती है सब्सिडी

कृषि उपकरण खेती को कम लागत और सरल बनाने के मकसद से तैयार किए जाते हैं ताकि खेती की लागत में कमी लाकर उत्पादन को बढ़ाया जा सके और फसल के नुकसान में कमी लई जा सके। इन कृषि यंत्रों पर अलग-अलग राज्यों में सब्सिडी का प्रवाधान भी है जिसे अपने जिले के कृषि अधिकारी सम्पर्क कर जानकारी लेकर सब्सिडी लाभ ले सकते हैं।

मल्टी क्रॉप प्लांटर से बुवाई करें कई फसलें

मल्टीक्रॉप प्लांटर से ऐसी फसलें जिनमें बीज दर बहुत ही कम या बीज का आकार बड़ा रहता है, साधारण बीज बोने वाली मशीन से इनकी बुआई तरीके से नहीं हो पाती है, इन्हें बोने के लिए इनकाइन्ड प्लेट प्लांटर का उपयोग करना ही बेहतर होता है। मल्टीक्रॉप प्लांटर में सीड ड्रिल की तरह लोहे का एक फ्रेम होता है जिस पर कि 06 सीड बॉक्स में फसो आपनर लगे होते हैं। प्रत्येक बॉक्स में एक बीज गिराने वाली प्लेट लगी होती है। यह डिस्क फरो ओपनर में एक-एक बीज गिराती चलती है, जो कि क्यू में एक निश्चित दूरी पर गिरता है। अलग-अलग तरह के बीजों के लिए अलग-अलग प्लेट लगाई जाती है। यानी सरसों, मटर, चना, मक्का, मूंगफली, अरहर, सोयाबीन, चना सभी फसलों के लिए अलग-अलग प्लेट का उपयोग होता है। इस यंत्र की प्लेट की बनावट इस तरह की गई है कि किसी भी फसल का बीज उसकी निर्धारित दर के अनुसार ही गिरेगा। इसकी कीमत 01 लाख 25 हजार से लेकर 05 लाख तक है। इसकी कीमत मशीन के आकार और बीजों के प्लेट के आकार पर अलग हो सकती है।

धान कटाई की इन पांच कृषि मशीनों से किसानों को मिलेगा डबल मुनाफा



भोपाल। जागत गांव हमार

हमारे देश में हर साल बड़े पैमाने पर किसानों के द्वारा धान का उत्पादन किया जाता है। किसान अपनी धान की फसल से अच्छा उत्पादन पाने के लिए फसल पर तो पूरा ध्यान देते हैं, लेकिन उसकी कटाई के तरीकों को नजरअंदाज कर देते हैं, जिसके चलते उन्हें काफी नुकसान का सामना करना पड़ता है। धान की फसल से अधिक से अधिक मुनाफा पाने के लिए किसानों को कटाई के सही तरीकों के बारे में पता होना चाहिए। किसानों के लिए धान कटाई की कुछ बेहतरीन मशीनों की जानकारी लेकर आए हैं, जिनका नाम शक्तिमान पैडी मास्टर 3776 हार्वेस्टर, करतार 4000, दशमेश 9100, प्रीत 987 और केएस गुप केएस 9300 - क्रॉप मास्टर हैं। बता दें कि यह सभी कृषि मशीनों में धान कटाई के लिए सबसे अच्छी मानी जाती है। इसे किसान कम समय में ही अधिक से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आइए इन कृषि यंत्रों के बारे में विस्तार से जानते हैं-

धान काटने की पांच बेहतरीन कृषि मशीन

शक्तिमान पैडी मास्टर 3776 हार्वेस्टर- धान की कटाई के लिए शक्तिमान पैडी मास्टर 3776 हार्वेस्टर मशीन काफी अधिक लोकप्रिय है। इस कृषि मशीन में 110 लीटर ईंधन टैंक क्षमता, इंजन रेटेड आरपीएम 2200 तक है। यह कृषि मशीन काफी मजबूत और लंबे समय तक चलने वाली है।

करतार 4000- इस मशीन से धान की कटाई मिन्टों में हो जाती है। इसकी चौड़ाई 4199 मिमी तक होती है। इसमें 380 लीटर ईंधन टैंक क्षमता, 6 लिटेंडर वाटर कूल्ड 101 एचपी इंजन दिया गया है। इस कृषि मशीन में हाइड्रोलिक स्टीयरिंग सिस्टम की सुविधा दी गई है। यह किसानों के लिए बेहद किफायती कृषि उपकरण है।

दशमेश 9100- यह मशीन सिर्फ धान की ही कटाई नहीं करती बल्कि दशमेश 9100 से किसान गेहूं फसल की भी कटाई सरलता से कर सकते हैं। इसमें 2200 वाटर-कूल्ड इंजन रेटेड आरपीएम और वहीं 110 एचपी उत्पन्न करने वाले 6 लिटेंडर की सुविधा दी गई है। इसके अलावा इस कृषि मशीन में 320 लीटर तक फ्यूल टैंक की क्षमता दी गई है।

प्रीत 987 कृषि मशीन- इस कृषि उपकरण में लगभग 14 फीट चौड़ाई वाला कटर बार दिया गया है, जो फसल की कटाई आसानी से करता है। प्रीत 987 में 3 फीटवर्ड +1 रिक्स या फिर 4 फीटवर्ड + 1 रिक्स की सुविधा दी गई है। इस मशीन में ड्राई और वेट टाइप फ्यूल क्लीनर का कोरिथनेशन दिया गया है। वहीं अगर इसके इंजन की बात करें, तो इसमें 2200 वाटर कूल्ड इंजन रेटेड आरपीएम दिया गया है।

केएस गुप केएस 9300 क्रॉप मास्टर - धान कटाई की इस बेहतरीन कृषि मशीन में 14110 फीट चौड़ाई वाला कटर बार दिया गया है, जो सरलता से फसल की कटाई कर देता है। इस मशीन में 4 लिटेंडर वाटर कूल्ड इंजन दिया गया है। इसके अलावा इसमें 5 ट्यूबों का बंद है। इस मशीन को खेत में चलाना बेहद ही आसान है।

कीमत और फीचर्स जानकर हैरान रह जाएंगे

एक बार की चार्जिंग में 100 किमी तक चलता है ये इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर

भोपाल। जागत गांव हमार

देश में इलेक्ट्रिक स्कूटी से लेकर कार और बसों को भी सरकार लगातार बैटरी चालित करने के प्रयास कर रही है। इसका कारण तेल के प्राकृतिक सीमित संसाधनों के दोहन में कमी लाना है। साथ ही देश में ऊर्जा के नए आयामों को स्थापित करना भी है। कृषि क्षेत्र में भी इस तरह के कई नए कृषि यंत्रों का विकास हो चुका है। जिनमें कृषि ड्रोन, ग्रास कटर आदि हैं। लेकिन कृषि तकनीक के विकास के साथ ही अब किसानों का साथी कहा जाने वाला ट्रैक्टर भी अब डीजल से नहीं बल्कि इलेक्ट्रिक बैटरी से चलेगा। इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स लिमिटेड के इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर आईटीपीएल-ई ट्रैक्टर कंपनी ने 2023 में ही लॉन्च किया है।

इस ट्रैक्टर के कुकूछ खास फीचर्स

- ▶ इसकी अधिकतम गति 30 किलोमीटर/घंटे है
- ▶ एक बार की चार्जिंग में 100 किलोमीटर तक चलेगा
- ▶ 35 हॉर्स पावर का अउटपुट
- ▶ 300 एनएम का टॉर्क उत्पन्न कर सकता है

ट्रैक्टर की कीमत

इसे किसानों की सुविधा के अनुसार बनाया गया है। यह खेतों से लेकर किसानों के कई तरह के व्यावसायिक कामों को आसानी से कर सकने में सक्षम है। वहीं इसकी कीमत की बात करें तो यह बाजार में 3 से 5 लाख के बीच रखी गई। यह किसानों को कई तरह की परिस्थितियों से निरत भी दिलाएगा। साथ ही इसके रखरखाव में भी किसानों का बहुत कम खर्चा आएगा।

मविष्य की संभावनाएं

असते कृषि क्षेत्र की दृष्टि से यह ट्रैक्टर आज ही नहीं बल्कि भविष्य के लिए भी बहुत काम आने वाला है। भारत समेत दुनिया भर में प्राकृतिक तौर पर मिलने वाले पेट्रोल, डीजल की गृहस्थ यह ट्रैक्टर ले लेगा। इसका कारण यह है की यह विद्युत चालित होते हैं। इनके कम रखरखाव के खर्च और चलने में आसानी के कारण यह किसानों की पहली पसंद भी बना हुआ है। ट्रैक्टर की खरीद पर सब्सिडी की भी है सुविधा अगर कोई भी किसान इस तरह ई ट्रैक्टर को खरीदना चाहता है तो उसके पहले उसे सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के अनुसार मिलने वाली सब्सिडी के बारे में भी जानकारी लेना बहुत जरूरी है। वर्तमान समय में बहुतेरी राज्य सरकारें भी ई ट्रैक्टर की खरीद के लिए अनुदान राशि मुहैया करा रही हैं। आपको इसके लिए अपने नजदीकी कृषि विज्ञान केंद्र या अन्य सरकारी कृषि विभाग से जानकारी को एकत्र करने के बाद ही खरीद करना चाहिए।

तथा है फायदे

- ▶ डीजल से छुटकारा
- ▶ कम लागत में ज्यादा काम
- ▶ प्रदूषण से पूरी तरह निजात
- ▶ बहुत कम मेंटेनेंस का खर्चा
- ▶ घरेलू और व्यावसायिक कामों में मददगार



भारत में पाई जाने वाली भैंस की नस्लें और उनकी विशेषताएं

भारत में पायी जाती हैं, भैंस की कुल 26 नस्ल जिनमें से 12 नस्लें बढ़िया दूध उत्पादन के लिए जानी जाती हैं..

भोपाल। जागत गांव हमार

भारत विश्व में भैंसों की सबसे अधिक आबादी वाला देश है और देश की एक बड़ी आबादी भैंस पालन से जुड़ी हुई है, लेकिन बहुत कम लोगों को पता होगा कि देश में कितनी तरह की भैंसे पायी जाती हैं। कौन सबसे अधिक दूध देने वाली नस्ल है। केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान के अनुसार देश में भैंसों की मुरा, नीलारावी, जाफराबादी, नागपुरी, पंढरपुरी, बनी, भदावरी, चिल्का, मेहसाणा, सुती, तोड़ा, स्वैप, तराई, जेरंगी, कालाहांडी, परालखेमुंडी, मंडल/गंजम, मराठवाड़ी, देशिला, असामी/मंगूस, संभलपुरी, कुड्डांड, धारावी, साउथ कन्नारा, सिकामीस और गोदावरी जैसी 26 तरह की नस्लें हैं। इनमें से 12 नस्ल की भैंसें रजिस्टर्ड नस्लें हैं, जोकि ज्यादा दूध देती हैं। इनमें मुरा, नीलारावी, जाफराबादी, नागपुरी, पंढरपुरी, बनी, भदावरी, चिल्का, मेहसाणा, सुती, तोड़ा, जैसी भैंस शामिल हैं।



देश में भैंसों की आबादी 109.9 मिलियन, 20वीं पशुगणना के अनुसार

20वीं पशुगणना के अनुसार, देश में भैंसों की आबादी 109.9 मिलियन है, जबकि अगर प्रदेश के हिसाब से बात करें तो सबसे अधिक भैंसों की संख्या उत्तर प्रदेश में है, उसके बाद राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश और बिहार जैसे प्रदेश आते हैं। भारत में 12 तरह की भैंसों की नस्लें पायी जाती हैं, हर भैंस की अपनी खासियत होती है।

मुरा भैंस मुरा भैंस सबसे अधिक दूध देने वाली नस्ल होती है। दैते तो मुरा नस्ल की भैंस हरियाणा के रोहतक, हिसार व जींद और पंजाब के नाम व पटियाला जिले में पायी जाती है, लेकिन अब तो कई राज्यों के पशुपालक मुरा भैंस को पालने लगे हैं। इसकी औसत उत्पादन क्षमता 1750 से 1850 लीटर प्रति व्यात होती है। इसके दूध में वसा की मात्रा 9 प्रतिशत के करीब होती है।

सुती भैंस (सुती) भैंस की यह नस्ल गुजरात के खेड़ा और बड़ोदा पायी जाती है। भैंस का रंग रस्टी ब्राउन से सिल्वर ग्रे या ब्लैक तक होता है। इसके दूध में वसा की उच्च मात्रा पाई जाती है। यह नस्ल सीमित सुविधाओं और संसाधन में भी दूध का अच्छा उत्पादन देती है। इसकी औसत उत्पादन क्षमता 900-1300 लीटर प्रति व्यात होती है, इसके दूध में वसा की मात्रा 8-12 प्रतिशत होती है।

जाफराबादी भैंस यह देश की सबसे भारी नस्लों में से एक है, यह मूल से रूप से गुजरात के गिर के जंगलों में पायी जाती है, लेकिन अब इसका पालन कच्छ व जामनगर जिले में होता है। इसका सिर और गर्दन का आकार भारी होता है। इसका माथा काफी चौड़ा,

सींग का आकार काफी बड़ा और पीछे की तरफ मुड़ा हुआ होता है। यह भैंस अन्य नस्लों की भैंस से ज्यादा धिन तक दूध देती है। यह भैंस हर साल बच्चा देती है जो डेयरी उद्योग के लिए फायदेमंद होता है। इसका रंग गहरा काला होता है, इसका औसत उत्पादन प्रति व्यात 1000 से 1200 लीटर होता है।

मेहसाणा भैंस भैंस की यह नस्ल गुजरात के मेहसाणा जिले और गुजरात से लगे महाराष्ट्र के कुछ क्षेत्रों में पायी जाती है। इसका रंग ज्यादातर काला ही होता है, कुछ पशुओं का रंग काला-भूरा भी होता है। ये नस्ल कुछ-कुछ मुरा भैंस की तरह दिखती है, लेकिन इसका

शरीर मुरा भैंस की तुलना में काफी बड़ा होता है, लेकिन वजन उससे कम होता है। नर मेहसाणा का औसत शारीरिक वजन 560 किलोग्राम और मादा का वजन 480 किलोग्राम के आसपास होता है, सींग आम तौर पर दरती से आकार के होते हैं और वो मुरा भैंस से कम घुंरी हुई रहती हैं। इसका औसत उत्पादन 1200 से 1500 किलो प्रति व्यात होता है।

पंढरपुरी भैंस यह नस्ल महाराष्ट्र के सोलापुर, कोल्हापुर, रत्नागिरी जैसे जिलों में पायी जाती है, इसका नाम सोलापुर के पंढरपुर गांव के नाम पर पड़ा है। इसकी सींग काफी लंबी करीब 45-50 सेमी तक होती है। यह गहरे

और काले रंग की भैंस होती है। कुछ पंढरपुरी भैंसों के सिर और सफेद निशान भी होते हैं। इसकी प्रजनन क्षमता काफी अच्छी होती है, हर वर्ष इसका व्यात होता है। इसकी औसत उत्पादन क्षमता 1700-1800 किलोग्राम प्रति व्यात होती है।

चिल्का भैंस यह भैंस उड़ीसा कटक, गंजम, पुरी और खुर्द जिलों में पायी जाती है, इसका नाम उड़ीसा के चिल्का के झील के नाम पर पड़ा है। इस भैंस को देशी नाम से जाना जाता है। यह खारे क्षेत्रों में पायी जाती है, जिसका भूरा-काला या काला होता है। मध्यम आकार इस भैंस का औसत उत्पादन 500-600 किलोग्राम प्रति व्यात होता है।

तोड़ा भैंस भैंस की इस नस्ल का नाम तोड़ा आदिवासियों के नाम पर रखा गया है। यह नस्ल तमिलनाडु के नीलगिरी पहाड़ी क्षेत्रों में पायी जाती है, इनके शरीर पर काफी मोटा बालकोट पाया जाता है। इसकी औसत उत्पादन क्षमता प्रति व्यात 500-600 किलोग्राम होती है और इनके दूध में वसा की मात्रा 8 प्रतिशत होती है।

भदावरी भैंस यह नस्ल उत्तर प्रदेश के अग्रा, इटावा और मध्य प्रदेश के व्यसिरर क्षेत्र में पायी जाती है। इनके सिर का आकार छोटा और पेर भी छोटे-छोटे होते हैं। इस नस्ल के सूर का रंग काला और गर्दन के निचले हिस्सों पर दो सफेद निशान पाए जाते हैं। इस नस्ल की सबसे बड़ी खासियत यह है कि यह नस्ल कठिन परिस्थितियों में रहने की क्षमता रखती है। इसकी औसत उत्पादन क्षमता प्रति व्यात 1250-1350 किलोग्राम होती है।

कालाखंडी भैंस

यह नस्ल उड़ीसा के गाजापति, गंजाम, रायगड़ा और आंध्र प्रदेश के कुछ हिस्सों में पायी जाती है। इस नस्ल की भैंस का रंग काला-भूरा होता है। माथे का आकार चपटा और माथे पर सुनहरे बाल होते हैं। इनकी औसत उत्पादन क्षमता 700-800 किलोग्राम प्रति व्यात होती है।

नागपुरी भैंस

भैंस की इस नस्ल को एलिचपुरी या फिर बरारी के नाम से भी जाना जाता है। यह महाराष्ट्र के नागपुर, अकोला और अमरावती जिले में पायी जाती है। इनकी सींग तलवार की तरह लंबी होती हैं। इनके नर भैंसों को भारी काम में प्रयोग किया जाता है। इनकी उत्पादन क्षमता 700-1200 किलोग्राम प्रति व्यात होती है।

नीली रावी भैंस

इस नस्ल की भैंस मूल रूप से रावी नदी के किनारे की हैं, जोकि फिनोजपुर जिले के साहिलवाल घाटी और पाकिस्तान के साहिलवाल में पायी जाती हैं। इनका सिर छोटा और दोनों आंखों के बीच छोटा गड्ढा होता है। इनके नर भैंसों को भारी काम के लिए प्रयोग किया जाता है। इनकी औसत उत्पादन क्षमता 1500-1800 किलोग्राम प्रति व्यात होती है।

बनी भैंस

गुजरात के कच्छ क्षेत्र में पायी जाने वाली बनी भैंस को कुंडी नाम से भी जाना जाता है। इस भैंस की कई खासियतें होती हैं। ये भैंस अधिक गर्मी और सर्दी दोनों को बर्दाश्त कर लेती हैं। कड़के के धूप में चारे की तलाश में दूर तक निकल जाती हैं। इनका रंग गहरा काला होता, कभी-कभार हल्का भूरा भी होता है। इनकी सींग अंदर की तरफ घुंरी रहती हैं। इनकी उत्पादन क्षमता 1100-2800 किलोग्राम प्रति व्यात होती है।



सरसों की 10 किस्में, जिन्हें मिलेगी बंपर पैदावार

सरसों की पूसा मस्टर्ड-32- किस्म सौ दिन के अंदर हो जाती है तैयार

भोपाल। जगत गांव हमार

रबी की फसलों की बुवाई का सीजन चल रहा है। इसके तहत अधिकतर किसान गेहूं व सरसों की बुवाई करते हैं। बाजार में सरसों के भाव अच्छे मिल जाते हैं। ऐसे में अधिकतर किसान सरसों की खेती में लगे हुए हैं। सरसों की बहुत सी अधिक उत्पादन देने वाली किस्में हैं जिनसे किसान काफी अच्छी पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। ऐसे में किसानों को सरसों की उन्नत किस्मों की बुवाई करनी चाहिए ताकि उन्हें बेहतर लाभ मिल सके। सरसों की बुवाई का काम सितंबर माह से ही शुरू हो जाता है और अक्टूबर तक चलता है। अलग-अलग क्षेत्रों में इसकी बुवाई का समय अलग-अलग होता है। इस समय सिंचित क्षेत्र में सरसों की बुवाई की जा सकती है। जिन किसानों ने अभी तक सरसों की बुवाई नहीं की है वे इस माह सरसों की बुवाई कर सकते हैं।

सरसों की पूसा मस्टर्ड-32- सरसों की इस किस्म को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्था (आईएआरआई) पूसा द्वारा विकसित किया गया है। यह किस्म 100 दिन के अंदर तैयार हो जाती है। यह सरसों की पहली एकल शून्य किस्म है। इस किस्म की खास बात यह है कि इसमें सफेद रतुआ रोग नहीं लगता है। यह किस्म सामान्य सरसों की किस्म की तुलना में अधिक पैदावार देने में समक्ष है। इसमें तेल की मात्रा भी अधिक पाई गई है। सरसों की इस किस्म से किसान प्रति हेक्टेयर 25 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं।

सरसों की पूसा डबल जीरो-31 किस्म- सरसों की पूसा डबल जीरो-31 किस्म 144 दिन में पककर तैयार हो जाती है। यह पीले बीज वाली किस्म होती है। इसमें तेल की मात्रा 40.56 प्रतिशत पाई जाती है। इसमें एरुसिक एसिड की मात्रा 2 प्रतिशत से कम पाई जाती है और ग्लूकोसिनोलेट्स 30 पीपीएम से कम होता है। इसमें तेल व बीज आहार की क्वालिटी अच्छी होती है। सरसों की यह किस्म दिल्ली सहित राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र और हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों के आसपास के क्षेत्रों के लिए सिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त पाई गई है। सरसों की पूसा डबल जीरो-31 किस्म से औसत बीज उपज 2379 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर है।



सरसों की पूसा बोल्ड किस्म सरसों की यह किस्म सिंचित और बावनी दोनों क्षेत्रों में बुवाई के लिए उपयुक्त पाई गई है। यह किस्म 130 से 135 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इसमें तेल की मात्रा 42 प्रतिशत तक होती है। इस किस्म की 18 से लेकर 20 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है। सरसों की इस किस्म की खेती मुख्य रूप से दिल्ली, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में की जाती है।

सुरेखा (के.एम.आर. 16-02) किस्म सरसों की यह किस्म समय से बुवाई और सिंचित क्षेत्रों के लिए उपयुक्त पाई गई है। यह किस्म 125 से लेकर 130 दिन के भीतर पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म से प्रति हेक्टेयर करीब 25 से 28 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त मिल सकती है।

सरसों की बेबर सरसों 6460 किस्म यह सरसों की संकर किस्म है। इसमें तेल की मात्रा अधिक पाई जाती है। यह किस्म सरसों में लगने वाले कई प्रमुख रोगों के लिए प्रतिरोधी किस्म है। सरसों की इस किस्म से प्रति हेक्टेयर करीब 28 से 30 क्विंटल तक पैदावार मिल सकती है।

सरसों की लक्ष्मी (आरएच-8812) किस्म सरसों की यह किस्म सिंचित

क्षेत्रों के लिए उपयुक्त पाई गई है। इस किस्म के दाने मोटे होते हैं। यह किस्म करीब 140 से 150 दिन के भीतर पककर तैयार हो जाती है। सरसों की इस किस्म से प्रति हेक्टेयर करीब 20 से लेकर 22 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

बावो 902 (पूसा जय किसान) किस्म सरसों की यह किस्म 130 से लेकर 140 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म से प्रति हेक्टेयर 20 से लेकर 30 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है। खास बात यह है कि सरसों की इस किस्म में तुलाजिता, स्फेद रोली और मुद्गदान रोग के प्रति रोधक है।

सरसों की आरएच-749 किस्म सरसों की यह किस्म 125 से लेकर 135 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म से प्रति हेक्टेयर करीब 26 से लेकर 28 क्विंटल तक पैदावार मिल सकती है। खास बात यह है कि सरसों की यह किस्म सरसों में लगने वाले कई प्रमुख रोगों के लिए प्रतिरोधी किस्म है।

सरसों की जेके समूडि गोल्ड (जेकेएमएस-2) किस्म सरसों की यह किस्म 125 से लेकर 130

दिनों में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म से करीब 20 से लेकर 30 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त किया जा सकता है। खास बात यह है कि इस किस्म में स्फेद रस्ट और डाऊनी मिस्ट्र्यू रोग को सबन करने की क्षमता होती है।

सरसों की एनआरसीडीआर 601 किस्म सरसों की यह किस्म लक्ष्मी भूमि में बुवाई के लिए उपयुक्त पाई गई है। इस किस्म से प्रति हेक्टेयर करीब 18 से लेकर 26 क्विंटल तक पैदावार प्राप्त की जा सकती है। यह किस्म 135 से लेकर 140 दिन में तैयार हो जाती है।

सरसों की बुवाई का सही तरीका सरसों की बुवाई कतारों में की जानी चाहिए ताकि निरार्ड-गुडार्ड काम आसानी से किया जा सके। इसके लिए कतार से कतार की दूरी 45 से.मी तथा पीछे से पीछे की दूरी 20 से.मी रखनी चाहिए। सिंचित क्षेत्र में बीज की गहराई 5 से.मी तक रखनी चाहिए। बीजों की बुवाई के लिए सीडिलर का इस्तेमाल करना चाहिए। बीज की मात्र सिंचित क्षेत्रों में 3 से 4 किलोग्राम तक की जानी है। बीजों को बुवाई से पहले उपचारित अवस्था कर लेना चाहिए ताकि कीट-रोग का प्रकोप कम रहे।

कम पानी में भरपूर उत्पादन के लिए चना की नई किस्म पूसा चना 10216

भोपाल। देश में रबी सीजन में चना दलहन की मुख्य फसल है, कई राज्यों के किसान चने की खेती प्रमुखता से करते हैं, क्योंकि गेहूं की तुलना में चने की खेती कम पानी में आसानी से की जा सकती है। चने की बुआई का समय हो गया है। ऐसे में किसान चने की नई-नई किस्मों के बीज लगाना चाहते हैं ताकि अधिक उत्पादन प्राप्त कर अच्छा मुनाफा कमा सकें। पूसा संस्थान नई दिल्ली द्वारा देसी चने की एक ऐसी ही नई किस्म पूसा चना 10216 विकसित की गई है जो रोग रोधी होने के साथ ही कम पानी में भी अच्छा उत्पादन देती है। चने की यह किस्म देश के मध्य भाग खासकर गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, दक्षिण राजस्थान और उत्तर प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र के लिए विकसित की गई है। किसान इस किस्म की खेती उन क्षेत्रों में आसानी से कर सकते हैं जहां वर्षा आधारित खेती की जाती है क्योंकि इस किस्म को अधिक सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है।



पूसा चना 10216 किस्म की विशेषताएं

चने की यह किस्म लगभग 106 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। पूसा चना 10216 किस्म की मुख्य विशेषता यह है कि यह किस्म चने में लगने वाले मुख्य रोगों जैसे उकठा रोग, झुकड़ जड़ विगलन और स्टंट रोग के लिए मध्यम प्रतिरोधी होती है। साथ ही यह किस्म चने में लगने वाले कीट फस्ती छेदक के लिए मध्यम प्रतिरोधी है। चने की इस किस्म को लिंकेज गुण-4 पर क्यूटीएल हॉटस्पॉट के अनु गण के माध्यम से विकसित देश का पहला सूखा सहिष्णु किस्म से बनाया गया है।

पूसा चना 10216 की उत्पादन क्षमता

चने की इस किस्म से कमजोरी की स्थिति में भी अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है। कम नमी की स्थिति में इस किस्म की औसत उपज क्षमता लगभग 14.8 क्विंटल/ हेक्टेयर है। वहीं कम नमी की स्थिति में इस किस्म से अधिकतम लगभग 25.8 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की उपज प्राप्त की जा सकती है। इस किस्म के 100 ग्राम का नमूना लगभग 22.2 ग्राम होता है।

चने की खेती की मुख्य बातें

बता दें कि चने की खेती के लिए उचित जल विकास वाले खेत, बरतुई बोट से चिकनी मिट्टी वाले खेत उपयुक्त होते हैं। वहीं चने की बुआई का उचित समय उत्तर पश्चिमी तथा उत्तर पूर्वी भारत के मैदानी क्षेत्रों में बारानी वृषाओं में अक्टूबर के दूसरे पखवाड़े तथा सिंचित वृषाओं में 15 नवम्बर तक की जा सकती है। किसानों को बुआई के समय यह बात ध्यान रखना चाहिए कि इसके बीज मिट्टी में लगभग 10 से.मी.तक गहराई में डाला जाए। गहराई कम होने से उकठा रोग लगने की संभावना अधिक रहती है। वहीं पिछेती बुआई में पीछे से पीछे की दूरी 22.5 से.मी रखनी चाहिए। वहीं दलहन फसल होने के नाते चने के बीज को उचित राइजोबियम टीके से उपचार करने से लगभग 10-15 प्रतिशत अधिक उपज मिल सकती है।

कृषि वैज्ञानिकों ने गेहूं की कई नई किस्में विकसित की

गेहूं की इस नई किस्म से मिलेगी 81 क्विंटल तक पैदावार

भोपाल। जगत गांव हमार

खरीफ की फसल कटाई के बाद किसान रबी फसलों की बुवाई करने में जुट जाएंगे। रबी फसलों में गेहूं की खेती प्रमुख रूप से की जाती है। देश के लाखों किसान गेहूं की खेती करते हैं। ऐसे में गेहूं की उन्नत किस्म की बुवाई की जाए तो किसान गेहूं की खेती से काफी अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। आज कृषि वैज्ञानिकों ने गेहूं की कई नई किस्में विकसित की हैं जो अधिक उत्पादन देने के साथ रोग प्रतिरोधी भी हैं। इन्हीं किस्मों में से गेहूं की एक किस्म पूसा गौतमी एचडी 3086 है जिसे पूसा संस्थान नई दिल्ली की द्वाारा विकसित किया गया है। इस किस्म की खास बात यह है कि यह एक रोग प्रतिरोधी किस्म है जो एक हेक्टेयर में करीब 81 क्विंटल की पैदावार देती है। पूसा गौतमी एचडी 3086 किस्म की समय से बुवाई और सिंचित अवस्था के लिए उपयुक्त मानी गई है। गेहूं की यह किस्म उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र में 145 दिन में तैयार हो जाती है। जबकि उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में यह 121 दिन में ही पककर तैयार हो जाती है। खास बात यह है कि यह किस्म पीले तथा भूरे रतुआ रोग के प्रतिरोधी किस्म है जिन इस किस्म में इस रोग का प्रकोप कम होता है। इस किस्म में प्रोटोटीन की मात्रा भी अधिक पाई जाती है। इस किस्म में उच्च निष्कर्षण दर 70.5 और उत्कृष्ट चपाती गुणवत्ता मूल्यंक 7.7 है। गेहूं की यह किस्म रोटी (चपाती) बनाने के लिए उपयुक्त है।



किन राज्यों के किसान कर सकते हैं पूसा गौतमी एचडी 3086 किस्म की खेती

गेहूं की इस किस्म को उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्र पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान (कोटा और उदयपुर संभाग को छोड़कर) बोया जा सकता है। वहीं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में झांसी डिवीजन को छोड़कर इसकी बुवाई की जा सकती है। इसके अलावा गेहूं की इस किस्म को जम्मू और कश्मीर के हिस्से (कठुआ जिला), हिमाचल प्रदेश में ऊना जिला और पावटा के कुछ हिस्से और उत्तराखंड के तराई क्षेत्र के साथ ही उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्र जिसमें पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, असम और अन्य उत्तर पूर्वी राज्यों के मैदानी क्षेत्रों के लिए विकसित किया गया है।

पूसा गौतमी एचडी 3086 से कितनी मिलेगी पैदावार

अब बात की जाए पूसा गौतमी एचडी 3086 की पैदावार की तो इसकी अलग-अलग क्षेत्रों में इसकी अलग-अलग पैदावार प्राप्त होती है। उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्रों में इस किस्म की पैदावार 81 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। वहीं उत्तर पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में इसकी उपज 61 क्विंटल प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। यदि इसकी किस्म की औसत उपज की बात करें तो इसकी उत्तर पश्चिमी मैदानी क्षेत्रों में उपज 54.6 है और पूर्वी मैदानी क्षेत्रों में इसकी उपज 50 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। यदि पकड़ के हिसाब से देखें तो उत्तर पश्चिमी क्षेत्रों में इस किस्म से करीब 28.44 क्विंटल प्रति एकड़ की दर से उपज प्राप्त की जा सकती है।

गेहूं अधिक पैदावार देने वाली अन्य किस्में

उपरोक्त किस्म के अलावा गेहूं की कई ऐसी किस्में हैं जो अधिक पैदावार देती हैं। आप अपने क्षेत्र के हिसाब से गेहूं की किस्म का चयन करके इसकी बुवाई कर सकते हैं। गेहूं की अधिक उत्पादन देने वाली अन्य किस्में इस प्रकार से हैं।

गेहूं की डीबीडब्ल्यू 296 (करण ऐश्वर्या)

गेहूं की डीबीडब्ल्यू 296 (करण ऐश्वर्या) किस्म को आईसीआर- भारतीय गेहूं और अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा विकसित किया गया है। यह किस्म सूखे के प्रति सहनशील है। इस किस्म की उपज क्षमता 83.3 क्विंटल है। वहीं इसकी औसत उपज 56.1 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इसे पंजाब, हरियाणा, राजस्थान (कोटा और उदयपुर संभाग को छोड़कर), पश्चिमी उत्तर प्रदेश (झांसी संभाग को छोड़कर), जम्मू और कश्मीर के कुछ हिस्सों (जम्मू और कठुआ जिला), हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों (ऊना जिला और पावटा घाटी) उत्तराखंड (तराई क्षेत्र) शामिल इन जगहों पर इसकी खेती की जा सकती है।

गेहूं की डीबीडब्ल्यू 327 (करण शिवानी)

गेहूं की डीबीडब्ल्यू 327 (करण शिवानी) किस्म प्राकृतिक और कृत्रिम परिस्थितियों में स्टाफ और लोक रस्ट रोग के लिए प्रतिरोधी किस्म है। यह किस्म 87.7 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज दे सकती है। वहीं इसकी औसत उपज 79.4 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इस किस्म की बुवाई उत्तर मैदानी क्षेत्र पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान में (कोटा और उदयपुर संभाग को छोड़कर) और पश्चिमी यूपी (झांसी डिवीजन को छोड़कर), जम्मू और कश्मीर (जम्मू और कठुआ जिला) के कुछ हिस्सों और हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों (ऊना जिला और पावटा घाटी) और उत्तराखंड (तराई क्षेत्र) के लिए इस किस्म की सिफारिश की गई है।

फसल सर्वेक्षण प्रक्रिया को ऑटोमेटिक बनाने की दिशा में एक पहल, फसल उत्पादन के मिलेंगे सटीक आंकड़े

जुलाई 2024 में शुरू होगा डिजिटल फसल सर्वेक्षण

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

देश में कृषि को आधुनिक बनाने पर जोर दिया जा रहा है। इसके साथ ही इससे जुड़े हर क्षेत्र में नई तकनीकों का इस्तेमाल करने पर जोर चल रहा है। इसी तरह सरकार अब फसल उत्पादन के आकलन की प्रक्रिया में को भी आधुनिक बनाने की तैयारी कर रही है। क्योंकि वर्तमान में जो प्रक्रिया अपनायी जाती है उसमें अधिकांश काम मैन्युअल होता है जिसमें कमियां हो सकती हैं। केंद्र का प्रयास है कि अगले कृषि वर्ष में जो फसल उत्पादन आकलन की प्रक्रिया अपनायी जाएगी वो डिजिटल होगी। केंद्र का प्रयास है कि डिजिटल फसल सर्वेक्षण कराया जाए। यह फसल सर्वेक्षण प्रक्रिया को ऑटोमेटिक बनाने की दिशा में एक पहल होगी।

कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय के अर्थशास्त्र, सांख्यिकी और मूल्यांकन प्रभाग (ईएसईडी) की मार्गदर्शन में दिशानिर्देश तैयार किए गए हैं। इन दिशा निर्देशों को अपनाने के लिए राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के साथ साझा किया गया है। इन दिशा निर्देशों में कहा गया है कि वर्ष कृषि वर्ष 2024-25 में फसलों के आच्छादन, गिरिद्वारी जैसी अन्य प्रक्रिया को डिजिटल करना है। दिशा निर्देश में यह भी कहा गया है कि प्रत्येक राज्य में फसल बुवाई डेटा संग्रह के लिए जीपीएस सक्षम मोबाइल एप्लीकेशन का उपयोग करेंगे। फसल उत्पादन आकलन प्रक्रिया को मैन्युअल से ऑटोमेटिक करना इसका मुख्य उद्देश्य है।



डेटा डिजिटल करने का उद्देश्य

इसलिए मूल्यांकन प्रक्रिया को डिजिटल बनाने का उद्देश्य मैन्युअल प्रक्रिया में आनेवाली खामियों को दूर करना था और सटीक बनाना था। ताकि समय पर सही आंकड़े मिल सकें। इसमें खेत के प्रकार से लेकर फसलों का पूरा डाटा रहेगा। यह व्यापक डेटा देश में कृषि और किसानों के विकास के लिए योजनाएं तैयार करने में मदद करेगा। डेटा कलेक्शन के डिजिटलीकरण करने के अलावा कृषि और किसान कल्याण विभाग में फसल अनुमानों के लिए जरी समय सीमा को भी संशोधित किया है, जो पहले पांच चरणों में जारी किए जाते थे।

गौरतलब है कि केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने भी सितंबर महीने में फसल उत्पादन के वास्तविक डेटा मूल्यांकन पर जोर देने की बात कही थी और इसका महत्व भी बताया था।

इन राज्यों में होता है डिजिटल डेटा का संग्रहण

वर्तमान में फसल आकलन प्रक्रिया मैन्युअल तरीके से की जाती है। इस कार्य में देरी भी होती है और कई प्रकार की खामियां भी होती हैं। हालांकि कर्नाटक, तेलंगाना और आंध्र प्रदेश जैसे कुछ राज्यों ने पहले ही जीपीएस-सक्षम मोबाइल ऐप का उपयोग करके डिजिटल डेटा संग्रह प्रणाली शुरू कर दी है। महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश जैसे अन्य राज्यों में डिजिटल सिस्टम मौजूद हैं, लेकिन वे फसल क्षेत्र की रिकॉर्डिंग तक ही सीमित हैं। इन्हीं सब खामियों को देखते हुए इस कार्य को आधुनिक बनाने पर विचार किया गया।

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने किया आह्वान

एनसीसीएफ इथेनॉल उत्पादन के लिए मक्का खरीदी करें सुनिश्चित

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने नई दिल्ली में नेशनल कोऑपरेटिव कंज्यूमर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के निदेशक मंडल को संबोधित किया। अमित शाह ने कहा कि एनसीसीएफ को वर्ष 2027-28 तक 50 हजार करोड़ रुपये का टर्नओवर प्राप्त कर आत्मनिर्भर बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि एनसीसीएफ को देश भर की प्राथमिक कृषि ऋण समितियों और अन्य सहकारी संस्थाओं को अपना सदस्य बनाने पर जोर देना चाहिये जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि एनसीसीएफ की अंश पूंजी में सहकारिता का अनुपात अपेक्षाकृत अधिक हो। केंद्रीय सहकारिता मंत्री ने कहा कि इसके लिए एनसीसीएफ को अपना बिजनेस प्लान डेवलप करने तथा बिजनेस एप्रोच में बदलाव लाना होगा।

शाह ने कहा कि एनसीसीएफ को आत्मनिर्भर सहकारी संस्था बनने के लिए अगले 10 वर्ष का एक रोडमैप बनाना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसे क्रियान्वित करने में सहकारिता मंत्रालय अपना पूर्ण सहयोग दे सकता है। केंद्रीय सहकारिता मंत्री शाह ने एनसीसीएफ द्वारा अपनी सहयोगी कंपनियों के साथ इथेनॉल के उत्पादन के लिए गुजरात, बिहार और अन्य राज्यों के किसानों से मक्के की खरीदारी सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया। उन्होंने कहा कि इससे किसान आत्मनिर्भर होंगे और उनकी आय भी बढ़ जाएगी।



दलहन की खरीदारी कर निर्यात के अवसर तलाशें

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने कहा कि अगर एनसीसीएफ और नेफेड चाहे तो सहकारिता मंत्रालय के सहयोग से राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र से डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अपना एक कॉमन ऐप तैयार करवा सकते हैं और इस कॉमन ऐप के माध्यम से सामंजस्य स्थापित कर मक्के की खरीदारी की जा सकती है। शाह ने एनसीसीएफ द्वारा किसानों से दलहन की खरीदारी कर निर्यात के अवसर तलाशने और इस खरीद को न्यूनतम समर्थन मूल्य पर सुनिश्चित करने पर बल दिया। उन्होंने एग्रेसिव एक्सटेंशन और मार्केटिंग अपनाने, किसानों को पूर्व में आश्वासन देकर खरीद करने तथा कॉमन कलेक्शन सेंटर बनाए जाने पर भी जोर दिया।

ताकि भंडारण की व्यवस्था बनाई जा सके

अमित शाह ने अपने संबोधन में यह भी कहा कि एनसीसीएफ प्याज एवं दालों की खरीद के लिए पैन्स के साथ संबद्ध हो सकता है, ताकि सहकारिता के क्षेत्र में विश्व की सबसे बड़ी भंडारण योजना के तहत इसके भंडारण की व्यवस्था बनाई जा सके। उन्होंने कृषि उत्पादों में निर्यात के अवसर और चावल की खरीदारी कर राष्ट्रीय सहकारी निर्यात निगमों द्वारा उसे निर्यात करने के अवसर तलाशने को भी कहा। विश्वेश्वर मंडल की बैठक में सहकारिता मंत्रालय के सचिव बालेश कुमार और एनसीसीएफ के प्रबंध निदेशक एफिस जोसेफ चंद्र भी शामिल हुए।

एग्रीकल्चर ग्रोथ के लिए सरकार का बड़ा कदम, किसानों को सलाहकार और तकनीकी सेवाएं दे सकेंगी निजी कंपनियां

भोपाल। जागत गांव हमार

देश के एग्रीकल्चर सेक्टर के विकास के लिए सरकार गंभीर है। नीति आयोग ने कहा है कि किसानों और कृषि के विकास के लिए निजी और सरकारी क्षेत्र की कंपनियां सलाहकार और तकनीकी सेवाएं दे सकेंगी। हालांकि, इसको लेकर गाइडलाइन भी जारी की जा सकती है। कुछ कंपनियां किसान उत्पादक संगठनों के जरिए किसानों से संपर्क कर रही हैं। उम्मीद है कि इससे कृषि उत्पादन पर बड़े स्तर पर सकारात्मक असर देखने को मिल सकता है। नीति आयोग के सदस्य रमेश चंद्र ने लॉन्गटर्म एग्रीकल्चर ग्रोथ के लिए निजी और सार्वजनिक क्षेत्रों के बीच साझेदारी के महत्व पर जोर दिया है। एक रिपोर्ट के अनुसार एसोचैम के कार्यक्रम में नीति आयोग के सदस्य ने कृषि उत्पादन को बढ़ावा देने और देश भर में कृषि प्रथाओं को पहचानने के लिए नए तरीकों के साथ आने की आवश्यकता पर जोर दिया। रमेश चंद्र ने कहा कि निजी क्षेत्र भारत में सटीक खेती में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह कृषि विकास को समर्थन देने के लिए सलाहकार सेवाएं, कृषि रसायन और उपयुक्त तकनीक दे सकता है। उन्होंने भारत के एग्रीकल्चर इंडस्ट्री विशेष रूप से पशुधन और मत्स्य पालन

में देखी गई वृद्धि पर भी प्रकाश डाला, जिसमें लगभग 2.75 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि हुई है। नीति आयोग के सदस्य ने एग्रीकल्चर में क्लाइमेट चेंज को बड़ा फैक्टर बताया। उन्होंने कहा कि असली चुनौती प्रोडक्शन बढ़ाने में है। ऐसा करने के लिए हमें लागत, तकनीकी प्रगति और रिसोर्स क्षमता की चिंताओं को दूर करना होगा। केंद्र सरकार एग्रीकल्चर प्रोडक्शन बढ़ाने के लिए ड्रोन समेत कई तरह की आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल को प्रोत्साहित कर रही है। इसके चलते निजी क्षेत्र की कंपनियां जैसे सलाम किसान ड्रोन विकसित कर रही है।

जागत गांव जागत की हमार का, हमारा है

गांव हमार के सुधि पाठकों...

- » जागत गांव हमार कृषि, पंचायत और ग्रामीण विकास आधारित समाचार पत्र है, जिसके लिए आपका स्नेह और प्यार हमें शुरू से मिलता रहा है। हम आशा और विश्वास करते हैं कि आगे भी मिलता रहेगा।
- » समाचार पत्र के लिए विशेषज्ञों की राय, प्रकाशन योग्य सामग्री के साथ-साथ आपके समक्ष इसे पहुंचाने तक हमारी जिम्मेदारी बड़ी चुनौतीपूर्ण है। आपके सहयोग से ही हम इस चुनौती का सामना कर पाएंगे।
- » ऐसे में हमारी आपसे अपेक्षा और आग्रह है कि जागत गांव हमार के वार्षिक सदस्य बनें और इसके लिए नीचे लिखे गए नंबर पर संपर्क करें।

संपर्क करें- अजय द्विवेदी-9229497393, 9425048589

“आपका सहयोग हमारी मजबूती का आधार बनेगा”